17 नवम्बर 2018, कुल पृष्ठ : 24, मूल्य 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 41, अंक : 15-16
नवम्बर (संयुक्तांक), 2018 (वीर नि.सं.-2545)

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

तमिलनाडु तीर्थयात्रा विशेषांक

तमिलनाडु का प्राचीन जैन वैभव

उद्घाटन समारोह

श्री सुशीलजी गोदिका अतिथियों का सम्मान करते हुए

डॉ. भारिल्ल | अशोकजी पाटनी सिंगापुर | अजितजी जैन दिल्ली | अनुरागजी गोलेछा तिन्डीवनम | वीरेन्द्रजी भायानी चेन्नई | प्रदीपजी चेन्नई | पारुलजी भायानी चेन्नई | सुरेशजी पाटनी कोलकाता

संघपति श्री पी.सी. सेठी परिवार का सम्मान

स्वागत भाषण करते हुए श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल

यात्रा किट का विमोचन

ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण वारसाणुवेक्खा ग्रंथ का विमोचन कराते हुए पं. मनोजजी मुजफ्फरनगर

यात्रा संबंधी जानकारी देते हुए संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल

संघपति श्री पी.सी. सेठी बस लीडर्स का सम्मान करते हुए

17 नवम्बर 2018, कुल पृष्ठ : 24 , मूल्य : 2/- 3 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

तमिलनाडु तीर्थयात्रा विशेषांक

वर्ष : 41, अंक : 15+16
नवम्बर (संयुक्तांक), 2018 (वीर नि.सं.-2545)

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित -

ऐतिहासिक रही तमिलनाडु तीर्थयात्रा

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित वीतराग विज्ञान यात्रा संघ की तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा दिनांक 16 से 21 अक्टूबर, 2018 तक अनेक विशिष्ट उपलब्धियों सहित ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुई। इस यात्रा में देशभर के अनेक शहरों से 308 यात्री सम्मिलित हुये।

यात्रा का विधिवत् उद्घाटन दिनांक 17 अक्टूबर को पौन्नूरमलै में किया गया। उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर उपस्थित थे।

सर्वप्रथम फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने स्वागत भाषण में यात्रा के उद्देश्यों एवं विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सभी समागत यात्रा बन्धुओं का स्वागत किया।

इस अवसर पर संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रा की संक्षिप्त रूपरेखा बताई तथा यात्रियों को दी जाने वाली आकर्षक किट व उसमें रखी सामग्री की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। तीर्थयात्रियों के लिये उपयोगी सामग्री सहित तैयार की गई विशेष यात्रा किट का विमोचन श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा मुम्बई ने किया। बस लीडर्स का बैच लगाकर स्वागत मंचासीन अतिथियों के साथ संघपति ने किया। संघपति परिवार (श्री प्रकाशचंदजी सेठी, श्रीमती शशि सेठी) का जैकेट, अंगरखा, शॉल, साफा पहनाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् संघपति श्री प्रकाशचंदजी सेठी परिवार, डॉ. भारिल्ल एवं गणमान्य अतिथियों ने हरिझण्डी दिखाकर यात्रा की शुरुआत की।

कार्यक्रम का संचालन पीयूषजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

छः दिवसीय इस ऐतिहासिक यात्रा में तमिलनाडु के प्रमुख जैन तीर्थों एवं प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन किये गये, जिसमें पौन्नूरमलै, करन्दै, वेनकुण्ड्रम धवलतीर्थ, जिंजी पर्वत, तिरुमलै अरिहंतगिरि, जिनकांची, सलुक्कै, थिरकोइल, विलुक्कम, वंगारम, तिरुप्पनपमूर, थिरूपरुत्तिकुण्ड्रम, तिरुनरुकुण्ड्रम पर्वत, कोलियानूर आदि तीर्थों पर जिनेन्द्र-पूजन, भक्ति, प्रवचन आदि का आयोजन किया गया।

सम्पूर्ण तीर्थयात्रा के दौरान सभी यात्रियों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा आत्मानुभूति का उपाय एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा कलिकाल सर्वज्ञ 'आचार्य कुन्दकुन्ददेव की महिमा एवं उनका जीवन परिचय' विषय पर प्रवचन रहे।

यात्रा संघ का अरिहंतगिरि व मेलचित्तामूर में विशेषरूप से स्वागत किया गया, इसके अतिरिक्त स्नातक परिषद् तमिलनाडु प्रान्त द्वारा भी यात्रा संघ का हार्दिक स्वागत किया गया। जिनकांची मठ के भट्टारकजी ने दादा का सम्मान किया। मेलचित्तामूर के भट्टारकजी ने दादा का सम्मान करते हुए कहा कि टोडरमल स्मारक में अध्ययन कर आये हुए स्नातकों के कारण ही तमिलनाडु प्रान्त में तत्त्वप्रचार का कार्य चल रहा है। इसके अतिरिक्त उन्होंने टोडरमल महाविद्यालय जैसा विद्यालय प्रारम्भ होने पर भूमि देने की भावना व्यक्त की।

यात्रा संघ की टीम ने यात्रियों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए आरामदायक यात्रा हेतु 2 x 2 पुश बैक मर्सिडीज बेन्ज की ए.सी. लग्जरी बसों, गुजराती/उत्तर भारतीय स्वादानुसार स्वादिष्ट भोजन एवं अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था की। 6 दिनों में 8 बसों एवं 6 कारों के माध्यम से कुल 308 यात्रियों के समूह लगभग 1200 कि.मी. की दूरी तय करते हुए कुल 17 तीर्थक्षेत्रों की भक्तिभावपूर्वक वंदना की।

दिनांक 21 अक्टूबर को कोलियनूर में आयोजित समापन समारोह के अवसर पर डॉ. भारिल्ल आदि सभी विद्वत्गण एवं विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे।

सर्वप्रथम फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रा के दौरान तैयार की गई तमिलनाडु प्रान्त में तत्त्वप्रचार की दीर्घकालीन व्यापक योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए समागत यात्रियों द्वारा तदर्थ प्राप्त दानराशियों की घोषणा की, जिसका सभी लोगों ने हर्षध्वनि द्वारा स्वागत किया। उन्होंने यात्रा के सफल प्रबंधन के लिये सभी व्यवस्थापकों और कार्यकर्त्ताओं तथा सहयोग के लिये सभी समागत यात्रियों का आभार व्यक्त किया।

इस यात्रा के सफल आयोजन में मुमुक्षु मण्डल चेन्नई एवं कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट का उल्लेखनीय योगदान रहा, एतदर्थ उनका विशेष रूप से आभार व्यक्त किया गया।

समारोह में श्री अनिलजी जैन (I.P.S.) जयपुर, श्री पी.सी.सेठी जयपुर, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री मणिलालजी मुम्बई, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री उल्लासभाई मुम्बई, श्री गौरवजी जैन जयपुर, आदि अनेक तीर्थयात्रियों ने अपने हृदयोद्गार सुनाये, जिससे सारी सभा गद्गद् हो उठी। तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन हुआ।

यात्रा संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी यात्रियों, बस लीडरों, तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं, इवेन्ट ऑर्गनाइजर श्री विजय नवलखा एवं यात्रा को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-परोक्षरूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का कृतज्ञता ज्ञापन किया तो सारी सभा भावविभोर हो उठी। संचालन पीयूषजी शास्त्री, जयपुर ने किया। ●

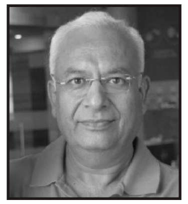

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री की कलम से...

तमिलनाडु स्थित तीर्थों की यात्रा एवं ज्ञानतीर्थ द्वारा जीवंततीर्थ जिनवाणी का प्रवर्तन

''ज्यों गंगा से गंगाजल ले गंगा को करता जग तर्पण

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री – टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा संचालित श्री वीतराग विज्ञान दिगम्बर जैन तीर्थयात्रा संघ द्वारा आयोजित चतुर्थ तीर्थयात्रा की उपलब्धियाँ इस मायने में अपूर्व मानी जायेंगी कि इसके माध्यम से तमिलनाडु प्रान्त में तत्त्वप्रचार के एक दीर्घकालिक नये युग का सूत्रपात हुआ है।

''उलटे बांस बरेली को'' कहावत तो सभी ने सुनी होगी, आज यह कहावत एक बार फिर चरितार्थ होने जा रही है।

वह समयसार ग्रन्थ जिसकी रचना तमिलनाडु स्थित पौन्नूर तीर्थ पर हुई, **पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी** ने इस कलिकाल में जिसके मर्म का मार्मिक उद्घाटन किया और जो आज हजारों निकट भव्य जीवों को मोक्षमार्ग पर लाने का निमित्त बन रहा है, विधि की विडम्बना ही है कि आज वह अपने ही उद्गमस्थल पर एक अनजान वस्तु बनकर रह गया है और **अब हम उनसे उपकृत साधर्मी लोग एक बार फिर उक्त तत्त्वज्ञान की धारा को दक्षिण भारत की धरा पर पुनर्प्रवाहित करने के लिये कृतसंकल्प हैं।**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में अ.भा.जैन युवा फैड. ने तमिल शास्त्री परिषद् (पं. टोडरमल दिग.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक शास्त्री विद्वानों का संगठन) के माध्यम से तमिलनाडु में वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की एक नयी योजना का सूत्रपात किया है।

अपने गुरु डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य से अभिभूत तमिल शास्त्री परिषद् के सदस्यों ने जब अरिहंतगिरि में उपस्थित होकर संघ के समक्ष तमिलनाडु की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए उनके द्वारा संचालित तत्त्वप्रचार की गतिविधियों और कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रस्तुत की तो यात्रा संघ के सदस्य यह जानकर रोमांचित हो उठे कि तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में इस शुष्कप्राय: प्रदेश में किस प्रकार हमारे शास्त्री विद्वान अपने सीमित साधनों के साथ ही तत्त्वज्ञान का दीपक प्रज्वलित किये हुए हैं।

यात्रा संघ में हमारे साथ यात्रा कर रहे कोलकाता/सिंगापुर निवासी श्री अशोकजी पाटनी एवं श्रीमती आरती पाटनी के मन में यह भावना बलवती हो उठी कि क्यों नहीं साधन सुलभ करवाकर तत्त्वप्रचार के इस अभियान को सुदृढ और दीर्घजीवी बनाया जाये। उनके आग्रह पर एक योजना तैयार करके समस्त संघ के समक्ष प्रस्तुत की गई और देखते ही देखते श्री अशोकजी पाटनी, श्री अजितजी जैन दिल्ली, डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, संघपति श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर, श्री सुरेशजी पाटनी के साथ कोलकाता से आये हुए यात्रियों एवं समस्त यात्रा संघ के प्रारम्भिक योगदान से एक निधि एकत्र की गई, जिससे कि तमिलनाडु प्रान्त में इस वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार को बल प्रदान किया जा सके। इस प्रकार तमिलनाडु प्रान्त में तत्त्वप्रचार की एक दीर्घकालीन योजना का सूत्रपात हुआ। इस योजना का क्रियान्वयन ''तमिलनाडु दिगम्बर जैन शास्त्री सभा'' के माध्यम से किया जायेगा, जिसके मुख्य कार्यकारी सदस्य सर्वश्री जम्बूकुमार जैन, डॉ. उमापति जैन, इलंगोवन् जैन, अशोक जैन, जयराजन् जैन, नाभिराजन् जैन, ए.रामदास, पद्मकुमार जैन, सुरेश जैन, बसंत जैन, विनोद जैन, जयकुमार जैन, श्रीकांत जैन, राजेश जैन, जिनेश जैन और महावीर जैन हैं।

हमारी पूर्व यात्राओं की ही तरह इस यात्रा में भी **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सूक्ष्म एवं गम्भीर आत्महितकारी प्रवचन इस यात्रा के मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहे। उनके द्वारा आत्मानुभव की प्रक्रिया का आगम सम्मत व युक्तियुक्त विश्लेषण चर्चा का विषय बना रहा, सम्पूर्ण यात्रा के दौरान एक ही सूत्र सभी के चिंतन में रहा ''मा चिट्ठई मा जम्पई मा चिन्तई''।** प्रथम दिन डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन और कर्तृत्व का वर्णन प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर रहा।

तमिलनाडु स्थित जैन तीर्थों की **यह यात्रा इस मायने में भी अपूर्व, विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण रही कि इसके माध्यम से हम सभी ने हमारे ऐसे-ऐसे प्राचीन तीर्थों के दर्शन किये, जिनके न तो अभी तक हमने नाम ही सुने थे, न हम उनकी भव्यता और प्राचीनता से परिचित थे और न ही किसी के लिये व्यक्तिगत तौर पर कभी उन तीर्थों तक पहुंचना ही संभव था।** संभव है कि उन तीर्थों के नाम तो शायद हम अब भी याद न रख पायें; पर उन तीर्थों पर स्थित 700-800 वर्षों से लेकर 2200-2300 वर्ष प्राचीन जिनबिम्बों और ग्रेनाइट की चट्टानों से निर्मित कलापूर्ण भव्य जिनालयों की जो छवि आज हम सभी तीर्थयात्रियों के मानसपटल पर उत्कीर्ण हुई है, उसे मिटा पाना किसी के लिये संभव नहीं है।

आचार्य कुन्दकुन्द की वह तपोभूमि पौन्नूर जहाँ उन्होंने आत्मसाधना की, जहाँ से उन्होंने महाविदेह की ओर प्रयाण किया, जहाँ का प्रत्येक रजकण उनके पावन चरणों के स्पर्श से पावन हुआ, आज उसी धरा पर उन्हीं रजकणों को स्पर्श कर हम सभी ने मानो उन महान निर्ग्रन्थ संत के साथ तादात्म्य स्थापित कर लिया।

पौन्नूरमलै की तलहटी में श्री अनन्तराय शेठ, उनके सुपुत्र श्री हितेनभाई एवं अनुज भाई द्वारा निर्मित भव्य संकुल एवं जिनालय में विराजमान श्वेत पाषाण निर्मित, विशाल पद्मासन मनोज्ञ जिनबिम्ब सभी के आकर्षण के केन्द्र रहे।

सम्पूर्ण प्रदेश में जैनधर्म और संस्कृति के उस वैभवशाली काल के अवशेष प्रचुर मात्रा में बिखरे हुए अपने समृद्ध अतीत की गाथा सुना रहे हैं। स्थानीय लोग कहते हैं कि आज भी जहाँ-जहाँ भी खुदाई की जाती है वहाँ जिनबिम्ब और जिनमंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं।

सभी समागत 8 लग्जरी बसों के कुशल नायक हमारे शास्त्री स्नातक एवं वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा यात्रा के दौरान पूरे समय किये गये आध्यात्मिक, रोचक और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं के आयोजन ने सभी यात्रियों के समय का सर्वश्रेष्ठ सदुपयोग किया।

हालांकि देशकाल की मर्यादाओं से ऊपर उठकर तो किसी के लिये कुछ भी कर पाना संभव नहीं होता; तथापि **उपलब्ध साधनों का कुशल प्रबंधन, कल्पनाशीलता, समर्पण, कठोर श्रम व सबसे अधिक महत्वपूर्ण, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करने की भावना से ओतप्रोत सम्पूर्ण आयोजक मंडल सहज ही सभी सहयात्रियों के गहन स्नेह का पात्र बना रहा।**

एक प्राचीन उक्ति है ''परदेश कलेश नरेशन खों'' अर्थात् विदेश में (एवं प्रवास में) तो राजाओं को भी प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है। हम यह तो नहीं मानते कि यात्रा के दौरान यात्रियों को कोई भी तकलीफ नहीं हुई होगी, **तथापि यात्रा संघ के किसी भी यात्री ने कभी भी किसी भी असुविधा की चर्चा नहीं की वरन् वे सभी प्रकार की व्यवस्थाओं की और प्रबंधकों की तारीफों के पुल ही बांधते रहे। निश्चित ही यह उनके गुणग्राहक स्वभाव और सकारात्मक दृष्टिकोण का ही प्रतिफल है।** तदर्थ हम

सभी लोग उनके आभारी हैं।

युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम का एकमात्र लक्ष्य अंततः सभी लोगों को आत्महितकारी अध्यात्म और स्वाध्याय के मार्ग पर लगाना है। अपनी उक्त यात्रा के माध्यम से हम अनेक नये लोगों को स्वाध्याय की प्रेरणा देने में सफल रहे हैं।

यात्रा के कुशल संयोजक शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, प्रबन्धक पीयूषजी शास्त्री, रूपेन्द्रजी शास्त्री, जिनकुमारजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, सर्वज्ञजी भारिल्ल, विरागजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री, आकाशजी शास्त्री, अनेकान्तजी शास्त्री, पीयूषजी शास्त्री, मयंकजी शास्त्री, अमनजी शास्त्री, समर्थजी शास्त्री, विनयजी शास्त्री, समकितजी शास्त्री, नमनजी शास्त्री आदि अनेक शास्त्री स्नातकों एवं महाविद्यालय में अध्ययनरत वर्तमान विद्यार्थियों से युक्त सम्पूर्ण प्रबंधन मंडल के कुशल प्रबंधन कौशल का सुपरिणाम अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का यह सफल और यशस्वी उपक्रम प्रतिवर्ष इसी प्रकार जारी रहे – ऐसी भावना है। ●

यात्रा संयोजक के मनोगत...

यह तो बहुत स्पष्ट है कि हमारे सिर्फ 2 ही उद्देश्य हैं, एक आत्मानुभूति और दूसरा तत्त्वप्रचार। इस यात्रा के पीछे भी हमारे यही उद्देश्य हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने सोचा –

– क्या यह संभव है कि तीर्थयात्रा करने की परिभाषा बदली जा सके ?

– क्या यह संभव है कि तीर्थयात्रा के सारे मापदंडों को बदला जा सके ?

– क्या यह संभव है कि तीर्थयात्रा के दौरान सारा समय सिर्फ और सिर्फ तत्त्वचर्चा में ही बीते ?

– क्या यह संभव है कि तीर्थयात्रा के दौरान हमें व्यवस्था संबंधी कोई और विकल्प ना सताये ?

– क्या यह संभव है कि तीर्थयात्रा के दौरान हमें आवश्यक सुविधाओं की चिंता ना करनी पड़े ?

– क्या यह संभव है कि तीर्थयात्रा के प्रारम्भ में जितना पवित्र भाव होता है उतना ही यात्रा की समाप्ति पर बना रहे ?

बस इसी सम्भावना को पूरी करने की कोशिश की हमारी यात्रा टीम ने। यही एक सोच कि लोगों को हमारे इन दुर्लभ, प्राचीन तीर्थों के दर्शन हो जाएं, वे हमारी इस विरासत से परिचित हो सकें, तत्त्व के प्रति रुचि लग जाए, पूजन, भक्ति और प्रवचनों का लगातार लाभ मिलता रहे, तत्त्वज्ञान की गंगा में बहें और उन्हें यात्रा के दौरान कोई तकलीफ ना हो, बस यही एक पावन उद्देश्य है इस वीतराग विज्ञान यात्रा संघ का।

हम, हमारी यात्रा टीम के साथ बैठकर इस यात्रा का माइक्रो मैनेजमेन्ट सिर्फ इस उद्देश्य से करते हैं कि हमारे अतिथि सिर्फ छोटी सी तकलीफ के कारण ऐसे सुखद अनुभव से वंचित ना रह जाएं। मैं कैसे भूल सकता हूँ हमारे उन विद्यार्थी विद्वानों को जो रोज लगभग 4-5 घंटे तत्त्वज्ञान की चर्चा करते हैं, लोगों का ख्याल रखते हैं, बैक ऑफिस को सम्भालने वाले रूपेन्द्र शास्त्री, पायलट टीम को-ऑर्डिनेटर जिनकुमार शास्त्री, लीडर्स को-ऑर्डिनेटर सर्वज्ञ भारिल्ल और इन सबको को-ऑर्डिनेट करने वाले बैकबोन पीयूष जैन को।

लोगों के अनुभव क्या रहे वो तो मैं क्या बताऊँ ? उसके लिये तो आपको ये पूरा अंक पढना ही होगा और उनसे ही सुनना होगा।

छोटे दादा के आत्मानुभूति पर हुए प्रवचनों ने तो इस यात्रा में चार चाँद लगा दिये, जिससे नये लोगों को भी जिनागम का नजदीक से परिचय हुआ। संजीवजी ने कुन्दकुन्द आचार्य से संबंधित अनेक रोचक और नयी जानकारियाँ दी जो सभी को उपयोगी रही।

तमिलनाडु प्रांत में तत्त्वप्रचार की नयी-नयी योजनाएं तैयार हुई हैं, जो इस यात्रा की बड़ी उपलब्धि रही, जिसके बारे में समय-समय पर आपको जानकारी मिलती ही रहेगी।

इस यात्रा में हम चाहते तो बहुत अधिक साधर्मियों को साथ ले चलते; पर तीर्थों पर उपलब्ध आवास को लेकर हमारी भी कुछ सीमाएं हैं, इसलिये हमें न चाहते हुए भी भारी मन से बहुत साधर्मियों को मना करना पड़ा, मैं उनसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

यात्रा के अनुभव के लिये तो आपको आना होगा अगली यात्रा में; हम आपका स्वागत करते हैं, अगली वीतराग विज्ञान यात्रा में...

– शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर

सह-सम्पादक की कलम से...

एक परमार्थ तीर्थयात्रा...

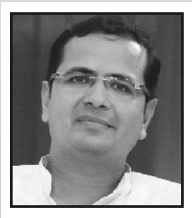

वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ द्वारा आयोजित तीर्थयात्रा के विशेषांक में तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की 6 दिन तक की गई अभूतपूर्व यात्रा के दौरान हुये यात्रियों के अनुभवों को प्रकाशित किया जा रहा है। उत्तर भारत के लोगों के लिये अत्यंत दुर्लभ एवं दुर्गम क्षेत्रों की यात्रा करते हुए संघ के सभी यात्रीगण जिस आनंद का अनुभव कर रहे थे, उसे हमने यात्रा के दौरान महसूस किया है।

अनुभव की बात वाणी में नहीं आती, और वाणी को लेखनी में बांध देना और भी दुर्लभ होता है। इस बात को ध्यान में रखकर यदि पाठकगण इस विशेषांक में लिखे गये यात्रियों के अनुभवों को पढ़ेंगे तो उनके अनुभवों के शतांश को जान पायेंगे।

तीर्थयात्राएं तो बहुत होती हैं और बहुत लोग प्रतिवर्ष अनेक यात्राएं करते भी हैं। जन सामान्य मात्र तीर्थक्षेत्रों पर जाकर जिनमंदिरों एवं प्रतिमाओं के दर्शन को ही तीर्थयात्रा समझते हैं और यदि उसमें सर्व सुविधाएं मिल जाएं तो उसे ही यात्रा की सफलता समझते हैं; परन्तु जिनागम में तीर्थ शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया है कि **'तरन्ति त्ति एदाणि तित्थं'** अर्थात् जिससे तिरते हैं वो तीर्थ है।

शुद्धात्मा के अवलम्बन से संसार समुद्र से पार हुआ जाता है; अतः परमार्थ से वही तीर्थ है। धवला में रत्नत्रय को तीर्थ कहा, भगवती आराधना में श्रुत-जिनवाणी को भी तीर्थ कहा है। इस यात्रा में जिनवाणी के श्रवण-मन्थन की निरंतरता से यह एक परमार्थ यात्रा हुई है। इस यात्रा में आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अकलंकदेव आदि आचार्यों की साधना/विहार स्थली के दर्शन तो हुए ही, साथ ही उनकी वाणी जिनवाणी के मर्म को खोलने वाले जिनवाणी के गहन अध्येता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के आत्मानुभूति विषय पर प्रवचनों ने इस यात्रा को परमार्थ बना दिया। उनके अतिरिक्त बसों में उपस्थित विद्वानों ने यात्रियों को संसार समुद्र से तिरने की कला बताकर इस यात्रा को अभूतपूर्व बनाया है, अतः जिनदर्शन के साथ निजदर्शन में निमित्त होने से यह यात्रा निश्चित ही एक परमार्थ यात्रा हुई है। इस प्रकार की अन्तर्बाह्य विशुद्धि सहित यात्रा के लिये सभी व्यवस्थापकों को हार्दिक साधुवाद।

– डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर

संघपति की कलम से...

यह यात्रा बहुत ही अच्छी हुई। मैंने वीतराग विज्ञान यात्रा संघ के साथ और भी यात्राएं की हैं, लेकिन अब तक की सर्वोत्तम यात्रा मैं तमिल प्रांत की इस यात्रा को कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रथम दिन स्टेशन पर बारातियों के समान स्वागत से लेकर अंतिम दिन तक समय पर पूजन, भक्ति, नाश्ता, भोजन इत्यादि की सर्वोत्तम व्यवस्था रही। घूमने हेतु लग्जरी बसों की व्यवस्था रखी, जिससे सभी यात्री बहुत आराम के साथ यात्रा कर सकें।

आदरणीय छोटे दादा का आत्मानुभूति पर प्रवचन अपने आपमें अभूतपूर्व और अविस्मरणीय रहा; क्योंकि यह विषय प्रत्येक जनसामान्य जानना व सुनना चाहता है। अपने जीवन में आत्मानुभूति/सम्यग्दर्शन कैसे प्रगट हो – इसे डॉ. भारिल्लजी ने बहुत ही सरल भाषा में भलीभांति प्रस्तुत किया और बताया कि आपको कुछ नहीं करना है; **'बोलो नहीं, सोचो नहीं और चेष्टा भी मत करो; उत्कृष्टतम यह ध्यान है, निज आत्मा में रत रहो'।** प्रत्येक परिस्थिति में जानते रहना है, सहज रहना है, कर्तृत्व का बोझ अपने सिर से उतारना है। साथ ही पौन्नूर हिल पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने जो ध्यान कराया कि ध्यान कीजिये और देखिये आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी हमारे सामने साक्षात् खड़े हैं और हम आनंद ले रहे हैं – इस अद्भुत अनुभूति का वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता। मेरी यह भावना है कि छोटे दादा दीर्घ आयु तक स्वस्थ रहें तथा उनके सान्निध्य में जल्दी से जल्दी ज्यादा से ज्यादा यात्राएं करायी जायें, जिससे नये लोगों में यात्रा के साथ तत्त्वज्ञान के संस्कार पड़ें।

सभी लीडरों ने जो सभी को तत्त्व की बातें बतायी, वह बहुत प्रशंसनीय था। स्मारक के सभी पदाधिकारियों एवं स्नातकों ने सभी प्रकार की सुविधाओं का ध्यान रखा, इसके लिये बहुत–बहुत आभार। प्रतिवर्ष ऐसी यात्राएं होती रहें, यही मंगल भावना...।

– प्रकाशचंद सेठी, जयपुर

अविस्मरणीय यात्रा...

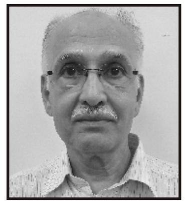

तमिलनाडु की अभूतपूर्व यात्रा अविस्मरणीय रही। शुद्धात्मप्रकाशजी, पीयूषजी व सभी कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम से यह यात्रा सफल हुई। उन्होंने हर छोटी–छोटी सुविधाओं का ध्यान रखा, यहाँ तक कि बिजली की समस्या के समाधान हेतु जनरेटर का भी प्रबन्ध किया। जिनकुमारजी तमिलनाडु के हैं, उनके बिना तो यह यात्रा सम्भव ही नहीं थी। पौन्नूर हिल (कुन्दकुन्द आचार्य की तपोभूमि) का स्पर्श एक सुखद अनुभव था; वहाँ पर शुद्धात्मप्रकाशजी द्वारा कराये गये ध्यान ने तो सबको 2000 वर्ष पूर्व कुन्दकुन्दाचार्य के समय में ही पहुंचा दिया।

तमिलनाडु का प्रान्त और अनेक गुमनाम प्राचीन लेकिन आकर्षक तीर्थों की यात्रा की चर्चा सुनकर मेरा मन भी यात्रा के लिये लालायित था; परन्तु क्या सुविधा होगी? रहने–भोजन की व्यवस्था कैसी होगी? सफर कैसा होगा? ना जाने कितनी बातें मन में सोचकर पीछे हट जाता। आखिर यह सोचकर कि जो होगा सो देखा जायेगा, हम यात्रा में शामिल हो गये; पर यात्रा के बाद अत्यंत प्रसन्न और सन्तुष्ट रहा। यदि मैं न जाता तो अनेक चीजों से वंचित हो जाता। यह अनुभव वर्षों तक हृदय में रहेगा। तीर्थों को देखकर यह लगा कि तत्त्वप्रचार के संदर्भ में तमिलनाडु प्रान्त में कार्य करने की आवश्यकता है। मैं अब यथासंभव हर यात्रा में अवश्य जाऊँगा, ऐसी यात्राएं हर वर्ष निश्चित रूप से होती रहे, – इस भावना के साथ सभी को बहुत–बहुत धन्यवाद।

– सुशील गोदिका एवं अनिल सेठी, जयपुर

अविस्मरणीय रही यह यात्रा...

अपने देश/साहित्य/संस्कृति को जानने के लिये यात्राएं महत्वपूर्ण साधन हैं। तीर्थयात्राएं अपने धर्म/समाज/संस्कृति की ऐतिहासिक विरासत को निकट से जानने का अवसर देती हैं; विचारों और संस्कृति के आदान–प्रदान का एक माध्यम भी बनती हैं।

भारत के दक्षिण प्रान्त खासकर तमिलनाडु स्थित तीर्थों की यात्रा उत्तर भारत के लोगों के लिये गूगल मैप के इस आधुनिक युग में भी दुर्गम प्रतीत होती है और भाषा इसका सबसे बड़ा कारण है। यही कारण है कि जब अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा मई में तमिलनाडु की तीर्थयात्रा की घोषणा की गई तो 24 घंटे में ही पूरी सीटें भर गईं। बाद में लोगों के अधिकारपूर्ण दबाव के कारण पौन्नूर से 10–12 कि.मी. दूर और आवास की व्यवस्था बनायी गयी, तब 308 तीर्थयात्रियों के साथ वीतराग विज्ञान यात्रा संघ द्वारा तमिलनाडु के तीर्थों की यात्रा संभव हो सकी।

पूजन/प्रवचन/दर्शन/भोजन/आवास/यातायात आदि यात्रा से जुड़े जितने भी क्षेत्र हैं, सभी में व्यवस्था के सभी संभव उच्च मापदण्डों का पालन इस यात्रा को अनूठा बनाता है। इस यात्रा में हर क्षेत्र/आयु/वर्ग और रुचि के लोगों को संतुष्टि मिले – इसका विशेष ध्यान रखा गया।

वीतराग विज्ञान यात्रा संघ अपनी विशेषताओं के कारण एक ब्राण्ड बन गया है। इस यात्रा को यदि एक शब्द में कहा जाये तो अद्भुत, अविस्मरणीय रही यह यात्रा...।

– पीयूष जैन, जयपुर

बस लीडरों की कलम से...

तमिलनाडु यात्रा : एक अविस्मरणीय अनुभव...

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव सम्मेदशिखरजी के पश्चात् यह दूसरा बड़ा कार्यक्रम था, जिसमें मुझे आरम्भ से अन्त तक कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में यह मेरे लिये सीखने का अभूतपूर्व अवसर था; क्योंकि वीतराग विज्ञान यात्रा संघ के साथ यह मेरी प्रथम यात्रा थी।

आरम्भ में जब बबलू भैया, पीयूषजी एवं जिनकुमारजी तमिलनाडु के क्षेत्रों का निरीक्षण करके वापस आये और फाइनल हुआ कि हम तमिलनाडु की यात्रा का आयोजन कर रहे हैं तो मैं मन ही मन बहुत खुश हुआ कि चलो मुझे तो पक्का इसमें जाने का अवसर मिलेगा ही; परन्तु अभी तक कोई जिम्मेदारी मुझे नहीं दी गयी थी, इसलिये थोड़ा संदेह भी मन में था, परन्तु जब एक दिन बबलू भैया ने मुझसे कहा कि यात्रा बुकिंग का एक मैसेज बनाकर फ्लैश कर दो और एक्सेल पर एंट्री करते जाना तब मुझे पक्का भरोसा हो गया कि मुझे तो ले ही जायेंगे और मैं बहुत खुश हो गया।

जैसे ही मैंने यात्रा बुकिंग का मैसेज व्हाट्सएप ग्रुप पर फ्लैश किया, 24 घंटे में ही सभी 220 सीटों की बुकिंग पूरी हो गयी। बुकिंग को जब मैंने मना किया तो पीयूषजी के पास फोन आने लगे। जब बबलू भैया को बात बताई तो उन्होंने कहा कि वेटिंग लिस्ट में नाम लिख लो, यदि व्यवस्था होगी तो बाद में कन्फर्म कर देंगे। जब वेटिंग भी 176 हो गई तो यह निर्णय हुआ कि आवास हेतु अन्य जगह की तलाश की जाए, ताकि अन्य यात्रियों को भी अवसर प्राप्त हो सके। भाई जिनकुमार के बहुत प्रयास के बाद एक जगह मिली और हमने अनेक लोगों को कन्फर्म कर दिया; परन्तु आवास की सुविधा देने वाला व्यक्ति बेईमान निकला और बुकिंग कैंसिल हो गई। अन्तिम दिनों में पुन: प्रयास करने पर VKC और TM मठ दो जगह हमें मिली, जिसमें हमने लोगों के ठहरने की व्यवस्था की। अंतत: 308 यात्रियों के साथ यात्रा करना निश्चित हुआ।

मुझे पहले बस लीडर की, फिर बदलकर पायलट की जिम्मेदारी दी गई, जिसे मैंने आप सबके सहयोग से पूर्णरूप से निभाने का प्रयास किया। बीच में एग्जाम के कारण यात्रा में नहीं जाने का विचार भी आया; परन्तु बबलू भैया व पीयूषजी ने मुझे समझाया, जिसके लिये मैं उनका हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूँ; क्योंकि यदि मैं नहीं गया होता तो शायद ऐसे ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्रों के दर्शन मेरे जीवन में कभी नहीं हो पाते।

दिनांक 16 अक्टूबर को जब सभी अतिथि आचार्य कुन्दकुन्द की तपोस्थली पौन्नूर में एकत्रित हुए तो उनका तमिल परम्परा अनुसार तिलक लगाकर एवं नारियल पानी पिलाकर भव्य स्वागत किया गया। दिनांक 17 अक्टूबर को प्रात:काल आचार्य कुन्दकुन्द के जयघोष के साथ हमारी यात्रा प्रारम्भ हुई। अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन/वन्दना करके हृदय प्रफुल्लित हो गया।

तीर्थयात्रा के साथ-साथ आदरणीय छोटे दादाजी द्वारा आत्मानुभूति के उपाय, संजीवजी गोधा द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द की महिमा विषय पर हुई मार्मिक तत्त्वचर्चा का जो आनन्द प्राप्त हुआ, वह अपने आपमें अनुपमेय है। मेरी यह प्रथम यात्रा मेरे लिये अविस्मरणीय, अद्भुत, अभूतपूर्व रही। शायद ही अब ऐसा अवसर कभी मेरे जीवन में प्राप्त हो। यात्रा में बबलू भैया, पीयूषजी के साथ कार्य करते हुए जो कुछ मुझे सीखने को मिला, उसका कोई मोल नहीं है। सर्वज्ञजी, जिनकुमारजी और सभी बस लीडर भाईयों की टीम ने इस यात्रा को सफल, सुखद और आनंददायक बनाने के लिये दिन-रात निरंतर प्रयत्न किया एवं मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया, इसलिये पूरी यात्रा टीम का हृदय से आभार! धन्यवाद!!

सभी अतिथियों की भी यह यात्रा निश्चित ही अविस्मरणीय, अद्भुत एवं हृदय को प्रफुल्लित करने वाली रही होगी। आपने व्यवस्था में मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया, उसके लिये हृदय से धन्यवाद! आभार!! जय-जिनेन्द्र!!!

– रूपेन्द्र शास्त्री, जयपुर

पिछड़े प्रदेश में प्रभावना...

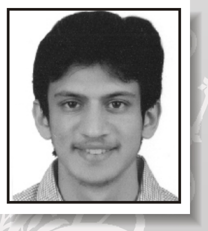

'लो रोको तूफान चला रे' उक्ति को सही साबित करती हुई आठ बसें, चार पायलेट गाड़ियां तमिल प्रदेश में तत्त्वप्रचार के लिये बिना किसी बाधा के आगे बढती जा रही थीं, पायलेट कार में बैठे-बैठे जब निगाहें पीछे मुड़ती थी, कारवाँ दिखता था तो यही उक्ति ख्याल में आती थी। मेरी निजी इच्छा थी कि जीवन में एक बार तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा जरूर करनी है; पर वह इतने बड़े संगठन के साथ इतने अभूतपूर्व ढंग से पूर्ण होगी, इसकी कल्पना भी नहीं की थी। 300+ अतिथियों का यह संघ जिस गांव में रुकता मानो उनके लिये दीपावली जैसा उत्सव हो जाता; उनके मंदिर में इतने लोगों के आने की उम्मीद उन्होंने कभी की ही नहीं थी। हम जिस भी मंदिर में रुके वहाँ उस मंदिर/मठ को सैंकड़ों लोगों द्वारा दान मिलना, सामूहिक पूजन/भक्ति के स्वरों का गूंजना, स्पीकर पर 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' का बजना और उसी धरा पर 'आत्मानुभूति' विषय पर प्रवचन होना, शायद उन मंदिरों की दीवारों के लिये भी पिछले कई दशकों में प्रथम अनुभव हो। वर्तमान में जिनधर्म प्रभावना की दृष्टि से पिछड़े प्रदेश में इतनी प्रभावना होना इतिहास के पन्नों में जरूर अंकित होगा और यात्रा की मैनेजमेन्ट टीम की भी कड़ी मेहनत की सार्थकता भी इसी में रही। भविष्य में यह संघ जहाँ भी रुख करे वहाँ भी ऐसी प्रभावना हुए बिना नहीं रहे – यही मंगल भावना है।

– सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर

जीवंत अविस्मरणीय तीर्थयात्रा...

तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा की घोषणा जिस दिन हुई उस दिन मुझे ऐसी खुशी हुई मानो कोई बहुत बड़ी निधि मिल गई हो; क्योंकि मैं दक्षिण भारत की तीर्थयात्रा में भी गया था और तब से ही मैंने सोचा था कि हर बार ऐसी यात्रा निकले और मैं उसमें शामिल होऊँ। 15 अक्टूबर को जैसे ही पौन्नूर पहुंचना हुआ मानो मुनिराजों की विहार भूमि का स्पर्श मात्र से मन रोमांचित हो उठा। दिगम्बर संत जिस भूमि पर विहार करते हों, ऐसी पवित्र भूमि का स्पर्श आनंददायक कैसे न हो? निश्चितरूप से यात्रा तो आनंददायक ही होने वाली थी और उसमें भी अखिल भारतीय युवा फैडरेशन और वीतराग विज्ञान यात्रा संघ की जुगलबंदी का तो कहना ही क्या। यात्रा तो कई होती हैं और होंगी, लेकिन ये यात्रा अपने आपमें अनूठी और अद्भुत थी, एक शब्द में यात्रा को कुछ बोलना हो तो मैं बस इतना ही कहूंगा अभूतपूर्व! अभूतपूर्व!! इस यात्रा में न केवल सुखसुविधा; बल्कि उसके साथ पूर्णरूप से तत्त्वज्ञान की धारा भी थी, जिसे हम वास्तविक रूप से तीर्थवंदना कह सकते हैं, मैं श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे यात्रा में शामिल होने का मौका दिया और ना केवल एक यात्री बल्कि एक लीडर के रूप में शामिल होकर मैंने यात्रा का लाभ लिया। मेरा तो सोचना यही है कि प्रत्येक आत्मार्थी को एक बार इस यात्रा का लाभ जरूर लेना चाहिये; जय-जिनेन्द्र। **– विवेक शास्त्री, इन्दौर**

अध्यात्मवेत्ता के दर्शन तत्त्ववेत्ता के साथ...

अद्भुत! अद्वितीय!! जिसकी कभी कल्पना मात्र ही की थी, वो सच हो गया। कुन्दकुन्द के ऊपर जिन्होंने सर्वस्व समर्पण किया हो, ऐसे छोटे दादा के साथ कुन्दकुन्ददेव के दर्शन करना और उनकी भूमि को स्पर्श करने का जो सौभाग्य मुझे बस लीडर के रूप में मिला वह मेरे लिये अविस्मरणीय है। वास्तव में जहाँ के कण-कण में अध्यात्म की सुगंध भरी हो, वहाँ आत्मानुभूति की गर्जना ने व कुन्दकुन्दाचार्य के परिचय ने अंतरंग में सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की दृढता प्रदान की, जिसके लिये आदरणीय छोटे दादा व डॉ. संजीवजी भाईसाहब का जितना बहुमान किया जाये उतना कम है। आचार्य कुन्दकुन्द, अकलंकदेव, समन्तभद्राचार्य, भूतबली व पुष्पदंतदेव की भूमि का स्पर्श कर, वहाँ का गौरवशाली इतिहास देखकर अंतरंग में अप्रतिम आनन्द की अनुभूति हुई। अगर कोई पूछे कि तीर्थवन्दना सम्यग्दर्शन में कैसे निमित्त होती है? तो मैं कह सकूंगा कि ऐसी तीर्थ वन्दना सम्यग्दर्शन में अवश्य ही निमित्त होगी। वास्तव में तीर्थवन्दना मंगलकारी आनन्दकारी होती है, इसका प्रथम बार प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। अन्त में तमिल यात्रा की पूरी टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद। सभी साथी आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार का लक्ष्य लिये आगामी यात्राओं में मिलें – ऐसी मंगलमयी भावना के साथ...। **– आकाश शास्त्री, अमायन**

एक यात्रा अनुभूति की ओर...

वो क्षण मेरी जिन्दगी का सबसे प्यारा, यादगार, अकल्पनीय था, जब मुझे जिनकुमारजी भाईसाहब ने तमिलनाडु यात्रा में बसलीडर के रूप में चलने को कहा। इस यात्रा में ऐसे प्राचीन मंदिरों के दर्शन करने को मिले जो न केवल सैंकड़ों अपितु हजारों वर्ष पहले निर्मित हुए; इन प्राचीन मंदिरों के दर्शन करने से एक अलग ही अनुभूति हुई। हम यात्रा करने ही नहीं कराने भी गये थे, जिसमें हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। आचार्यों द्वारा ताड़पत्रों पर रचित ग्रंथों का स्पर्श करना ही मेरा सबसे बड़ा पुण्य है। छोटे दादा ने 'आत्मानुभूति के उपाय' पर जो प्रवचन किया उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मैं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ के समस्त कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे यह सौभाग्य प्रदान किया; धन्यवाद। **– मयंक जैन, बण्डा**

इतिहास से एक मुलाकात...

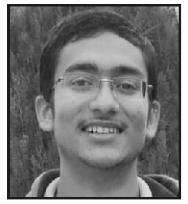

मुनिराजों की साधना-भूमि दक्षिण भारत ही रही है, वहाँ मुनिराजों द्वारा ताड़पत्रों पर लिखे हुए अनेक हस्तलिखित ग्रंथ आज भी उपलब्ध हैं, परन्तु उन्हें पढने वाले उपलब्ध नहीं हैं, जिस कारण आज स्वयं वे एक इतिहास बनकर रह गए हैं। उसी प्राचीन इतिहास को बताने वाले अनेक प्राचीन जिनमंदिर भी हैं, जिन्हें तमिल में 'कोइल' अथवा 'कोविल' कहा जाता है। इन्हीं मंदिरों के नाम से अनेक नगर भी बसे हुए हैं, जैसे-थिरकोइल इत्यादि। जहाँ आज मात्र एक-एक घर ही शेष रह गए, वहाँ आज से हजार, डेढ हजार वर्ष पहले नगर के नगर जैनों के बसे हुए थे। यह जैनों के गौरवशाली इतिहास को ही प्रस्तुत करता है। दक्षिण भारत में सभी मंदिरों की रचनाएं एक ही पद्धति की दिखाई देती हैं। प्रवेश द्वार की शुरुआत ही एक उन्नत शिखर के माध्यम से होती है, जो मात्र जिनमंदिरों की ही नहीं; अपितु सम्पूर्ण दक्षिण भारत की एक अद्भुत छटा है। मंदिरों में प्रवेश करते ही प्राचीन कलाकृति के भी दर्शन होते हैं तथा हम अपने पूर्वजों के विचारों से अवगत होते हैं।

इस यात्रा के दौरान तो वर्तमान साथियों की उत्कृष्ट विचारधारा से भी परिचित होने का तथा 'पहले आप' इस पवित्र भावना के उत्साह के साथ सम्पूर्ण यात्रा करने का अपूर्व अवसर मिला तथा साधर्मियों को छोटी से छोटी भी असुविधा न हो, इसका पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। यदि कदाचित कोई असुविधा आ जाये तो सभी कार्यकर्ता मिलकर तुरन्त ही सुलझाते थे। इस यात्रा में एक टीम वर्क का क्या महत्व होता है, उसका भी अनुभव हुआ और टीम वर्क करते हुए अपनी अनिवार्यता सिद्ध करने वाला ही सफल कार्यकर्ता होता है। प्रसन्नता तो इस बात की है कि उपर्युक्त इतिहास और विचारधारा

से अनेक आत्मार्थी जीवों को परिचित करवाया और सभी को कुशलतापूर्वक और बिना किसी असुविधा से यात्रा पूर्ण करवाई। उस उत्कृष्ट विचारधारा के साथ सभी आत्मार्थीजन मुनिराजों के समान उनकी तपोभूमि पर ही छोटे दादा के माध्यम से अनुभूति प्रगट करने का उपाय भी विचारने लगते थे। ''पहले आप'' ऐसे उत्कृष्ट विचारवान साथियों के साथ ऐसी उत्कृष्ट यात्रा करने का अवसर पुन: प्राप्त हो - ऐसी ही भावना है। **- अमन शास्त्री, लोनी**

एक अद्भुत यात्रा...

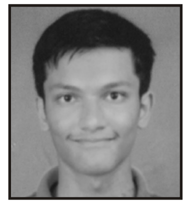

क्या ऐसी भी कोई यात्रा संभव है जहाँ प्रवचन, भक्ति, पूजन, ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता, भ्रमण, साधर्मीवात्सल्य, मित्रत्व, धर्म-प्रभावना जैसे गुणों का समावेश हो? हाँ ! मात्र वीतराग विज्ञान यात्रा संघ द्वारा आयोजित यात्राओं में ही ऐसा संभव है; परन्तु यात्रा कहाँ की थी? उस तमिलनाडु क्षेत्र की, जहाँ की भाषा भिन्न, वेश भिन्न, लोक भिन्न और संस्कृति भिन्न। हार्दिक वंदन है उन लोगों को, जिन्होंने ऐसी दुर्गम यात्रा को सहज बनाया। यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे प्राचीन (मंदिरों की अपेक्षा) तथा सबसे नवीन (अनुभवों की अपेक्षा) यात्रा थी। मैं पहली बार बस लीडर बना था और मेरे साथ रखा उन 15 भव्य जीवों को जिनसे मात्र धार्मिक बातें ही हुई। तीर्थक्षेत्रों का क्या मनोहारी, सुन्दर, अद्वितीय स्वरूप था; देखते ही मानो सम्यक्त्व हो जाये। आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अकलंकस्वामी जैसे दिग्गज आचार्यों की पावनभूमि को देख हृदय प्रफुल्लित हो उठा। हम जैनों का ऐसा समृद्ध इतिहास सुनकर मेरा मन नहीं भरा; रुचि और अधिक वृद्धिंगत होती गई। ऐसा यात्राओं का आयोजन तो प्रत्येक माह में होना चाहिये। मेरा अहोभाग्य है कि ऐसी यात्राओं का संयोग मिला। **- विनय जैन, मुम्बई**

तमिल में जैन और स्मारक...

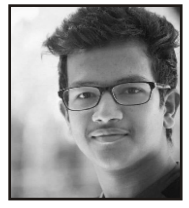

एक ऐसी जगह जहाँ कई वर्षों पहले मात्र जैन थे और आज वो इतिहास मात्र है। फिर भी यहाँ के क्षेत्रों को देखकर लगता है कि धर्म यहाँ था ही नहीं; अपितु फलता-फूलता भी था। आदरणीय दादा के प्रवचन से और वहाँ के क्षेत्रों को देखकर एक बात याद आती है कि मुनिराज एकांत स्थान पर रहते हैं, पहाड़ व वन जैसी जगहों पर। जब हम वहाँ का क्षेत्र देखते हैं तो लगता है मुनिराज यहीं विचरण करते होंगे, पहाड़ियों की एकांतता को देखकर मुनिराजों के ध्यान की स्थिति आंखों के सामने आ जाती है। ऐसा लगता है मानो कुन्दकुन्ददेव आ गए हों या सामने वाले पर्वत पर कोई मुनिराज ध्यानस्थ हों। जब हम मंदिरों की प्राचीनता को देखते हैं तो जैनधर्म मध्यकाल में कैसे फलाफूला ये भी समझ आता है। यहाँ की 850-2500 वर्ष प्राचीन प्रतिमाओं को देखकर महिमा आती है कि ये वही प्रतिमाएं हैं, जिनके दर्शन आचार्य कुन्दकुन्ददेव, आचार्य अकलंकदेव करते होंगे। मुगलकाल में मुस्लिम शासकों से इनका बचा रहना बहुत बड़ी बात है; क्योंकि हम सब जानते हैं मुस्लिम शासकों ने जैनधर्म के साथ क्या किया। इन प्रतिमाओं को सुरक्षित रखने वाले भी जैन ही रहे होंगे, जो अब वहाँ कम ही दिखते हैं, इसके भी कई कारण रहे होंगे। सच में अद्भुत है दक्षिण में जैन इतिहास। सबसे अधिक प्रसन्नता दक्षिण में, विशेषकर तमिल में स्मारक की एवं आदरणीय छोटे दादा की गरिमा को देखकर हुई कि लोग वहाँ दादा के दर्शन करना चाहते थे और उनसे तत्त्व सुनना चाहते थे, उनकी पुस्तकों का अनुवादकर दादा की वाणी को जन-जन तक पहुंचाना चाहते थे। स्मारक का लक्ष्य तमिल में भी पूरा होना बहुत अधिक प्रसन्नता की बात है। बस लीडर बनकर यात्रा करने का अनुभव अकथनीय है। जब यात्रा में छोटे दादा के व्याख्यान हों तो अनुभव का आनंद और बढ जाता है। बस में जो प्रतिदिन तत्त्वचर्चा चली वो चर्चा मेरे लिये बहुत अधिक लाभकारी रही उससे बहुत कुछ सीखा। इस यात्रा के लिये मैं स्मारक को, बस नम्बर 1 के सदस्यों एवं जिनकुमारजी भाईसाहब को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने बस लीडर बनने की जिम्मेदारी प्रदान की। मुझे पुन: स्मारक के सान्निध्य में स्मारक के साथ ऐसी यात्रा करने का और उसमें सहयोग करने का अवसर मिले यही भावना है। **- पीयूष जैन (शास्त्री अंतिम वर्ष)**

जंगल में मंगल...

इस यात्रा को महज एक यात्रा का नाम देकर आगे बढ जाना इसके साथ एक अन्याय ही होगा; क्योंकि स्वयं को समग्र भारतवर्ष के जैनतीर्थों का यात्री मानने वाले साधर्मियों ने जब इस मूल दक्षिण की ओर रुख किया तो स्वयं के समग्र का यात्री हो लेने के मान को बड़े ही सरलतापूर्वक खोखला पाया। पोन्नूर में प्रवेश पर उसकी वायु का स्पर्श मात्र लम्बे से लम्बे सफर की थकान मिटाने के लिये रामबाण था, आज भी प्रात: पहाड़ से निकलता सूरज मानो आचार्य कुन्दकुन्द के चरणों को स्पर्श करके ही नीचे प्रवेश करता हो। वंगराम से लेकर अरिहंतगिरि, थिरूपन्नामुर, जिनकांची आदि होते हुए अंत में कोलियानूर तक की यात्रा मानो अनुपम रोमांच को देने वाली थी। इस जीवंत यात्रा का प्रत्येक पड़ाव भीतर से अनंत आश्चर्यचकित करने वाला था और आखिर हो भी क्यों न, 1000, 1700, 2200, 2500 वर्ष की प्राचीनता आज तक सिर्फ कथा कहानियों में ही पढते आये थे; पर जिस जीवंत भव्यता का दर्शन वहाँ पहुंचकर हुआ वह सच में अद्भुत रोमांचकारी था। 8 बसों, 3 गाड़ियों 2 पायलेट गाड़ियों और 308 यात्रियों का काफिला जिस भी रास्ते से होकर निकलता था, वहाँ के लोग बस एकटक देखते ही रह जाते थे। 'जंगल में मंगल' कहावत को सच होते हुए इसी यात्रा में देखा। वैसे तो मैं स्वयं ही यात्रा की कार्यकारिणी समिति का सदस्य था; परन्तु तब भी इस वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ का जीवन-पर्यंत अनंत कृतार्थी रहूंगा।; क्योंकि तमिलनाडु जैसा क्षेत्र जहाँ जैन अतिअल्पसंख्यक मात्रा में रह गये हैं, ऐसे क्षेत्र में इतने साधर्मियों के साथ पहुंचकर समस्त सुख-सुविधाओं को ध्यान में

रखते हुए यात्रा को उस मुकाम पर पहुंचाना टोडरमल स्मारक द्वारा ही संभव है, जिसकी लोग बस कल्पना ही कर सकते हैं। अंत में मैं मेरे साथ उन समस्त 308 साधर्मियों के पुण्य की अनुमोदना करता हूँ, जिन्होंने इस इतिहास का साक्षात् दर्शन किया। **– नमन शास्त्री, खनियांधाना**

यथा नाम तथा काम...

जब ये निर्णय हुआ कि इस बार अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा का आयोजन करने वाला है, तो इस बात को सुनकर एकदम संशय में पड़ गया था, मन ही मन ये सोचकर घबरा रहा था कि इतने यात्रियों को लेकर वहाँ जाना और व्यवस्था करना कैसे संभव होगा? चूंकि स्वयं तमिल का होने पर भी वहाँ की अनेक चीजों से लगभग अनभिज्ञ ही था, अत: यह यात्रा केवल कल्पनाओं में विलय हो जाए – ऐसी कामना करने लगा था; परन्तु विशेष कला से युक्त मूर्तिकार कठोर से कठोर पत्थरों को भी व्यवस्थित, सुन्दर और पूजनीय बना देता है; मेरे साथ भी वैसा ही हुआ। मार्च माह में शुद्धात्मप्रकाशजी व पीयूषजी के साथ पायलट राउण्ड पर चार दिन के लिये निकला, देखते ही देखते इन दोनों ने वहाँ ऐसी योजना बनायी कि लगभग 60 मंदिर देखे और रुकने की व्यवस्था देखी, साथ ही बस आदि की जानकारी ली। इस अतिव्यस्त पायलट राउण्ड के बाद भैया से मैंने कहा हमने 4 दिन में 40 दिनों जितनी मेहनत की है। उस दिन के बाद मैंने जिन स्थलों पर असंख्यात मुनिराजों ने तपस्या की एवं जो कभी जैनों की नगरी हुआ करती थी और जहाँ वीतराग शासन का परचम था, ऐसे ऐतिहासिक स्थानों का दर्शन हमारे मुमुक्षु भाईयों को अवश्य कराना चाहिये – ऐसी भावना को साकार करने का संकल्प किया। उस दिन से लेकर आज तक ऐसा भावना के साथ इस टीम से जुड़कर यात्रियों को कहीं भी कोई छोटी तकलीफ भी नहीं हो, इस विचार से अनेक मीटिंग व कार्य किये, जिनका परिणाम आपके सामने है। अंतिम दिन जब अतिथियों ने नम आंखों से आभार व्यक्त किया तो मैं गद्गद् हो गया और सारी थकान पलभर में दूर हो गई। इस तरह श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ ने वीतरागी भगवंतों को दिखाया और आदरणीय छोटे दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों के माध्यम से उन वीतरागियों जैसे बनने की विधि बताई। इस तरह यथानाम तथा काम करने वाले इस वीतराग विज्ञान यात्रा संघ का मुझे कार्यकर्ता बनाने के लिये हार्दिक आभार! **– जिनकुमार शास्त्री, जयपुर**

अविस्मरणीय तमिल यात्रा : एक अनुभव

आओ भाई तुम्हें सुनाऊँ, गाथा तीर्थक्षेत्र की।
जिसके अनुभव वादन से मैं, पाऊँ रश्मि शिवसुख की।।
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस जब, प्राप्त हुआ वह सुफल सन्देश।
पंच दिवस के महायज्ञ में, थामने धर्मध्वजा का भेष।।
अष्ट वाहनों का था संग, त्रिंशत अतिथियों का उमंग।
लेकर पहुंचे जब सीमंधर वार, स्वागत हुआ भव्य साकार।।
शस्य श्यामला थी वह भूमि, पौन्नूर था नाम प्रथम।
कुन्दकुन्द की तपोस्थली, देख जगा बहुमान परम।।
तत्क्षण आनन्द जागा अपार, देखा नगर का उन्नत द्वार।
करने फिर नव मंगलचार, पहुंचे जिंजी तोरण वार।।
कैसे सुनाऊँ महिमा अपार, दूर भगे जहाँ कर्म विकार।
थिरक्कोइल का उन्नत शिखर, थिरुपरुत्तिकुन्द्रम लम्बा सफर।।
थोड़ी हंसमुख थोड़ी निराली, थोड़ी मस्तानी सफल साकार।
अपरिमित आनंद शिक्षा दात्री, सफल हुई यात्रा सुखकार।।

– समर्थ जैन, विदिशा

तीर्थयात्रियों की कलम से...

ज्ञानवर्धक यात्रा...

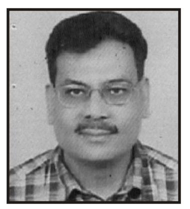

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ की चतुर्थ तमिलनाडु क्षेत्रों की यात्रा अपने आपमें बहुत ही अविस्मरणीय एवं ज्ञानवर्धक रही। पिछले वर्ष दशलक्षण पर्व के अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के कोलकाता आगमन पर हम सभी कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के साधर्मी भाई बहनों ने, पिछले कई वर्षों से जो यात्राएं कुछ कारणवश नहीं निकल पाई थी, उसे पुन: प्रारम्भ करने का आग्रह किया, जिसके फलस्वरूप हमें इस बेजोड़ एवं अद्वितीय तमिलनाडु यात्रा का लाभ मिला। जहाँ तक तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों तथा अद्भुत ऐतिहासिक मनोहारी प्रतिमाओं के दर्शन की बात करें तो इनके दर्शन व्यक्तिगत यात्राओं से तो कदापि संभव नहीं हो सकते। आदरणीय छोटे दादा डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवजी गोधा तथा अनेक स्नातक शास्त्री विद्वानों ने तो यात्रा को चार चांद लगा दिये। आदरणीय छोटे दादा द्वारा 'आत्मानुभूति की विधि' अत्यंत ही सुगम शैली में तथा डॉ. संजीवजी द्वारा कलिकाल सर्वज्ञ 'आचार्य कुन्दकुन्ददेव की महिमा एवं उनका जीवन परिचय' कराया गया, जिनकी हमें आज तक जानकारी भी नहीं थी। शास्त्री विद्वानों ने बसों में तत्त्वज्ञान संबंधी अनेक धार्मिक मनोरंजक कार्यक्रमों द्वारा हमें विकथाओं से तो दूर रखा ही साथ ही अनेक धर्म संबंधी नई जानकारियाँ भी प्राप्त हुई। यात्रा के कार्यक्रम एवं व्यवस्था संबंधी आयोजकों की जितनी प्रशंसा की जाए कम ही होगी। मर्सिडीज ए.सी. आरामदायक बसें, विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन, आवास संबंधी व्यवस्थाएं इतनी सुन्दर एवं व्यवस्थित थी, जिनकी इस तरह की शेष पृष्ठ 15 पर...

बसों का कारवां

यात्रा का शुभारम्भ करते हुए
संघपति श्री पी.सी. सेठी

भक्ति और मस्ती

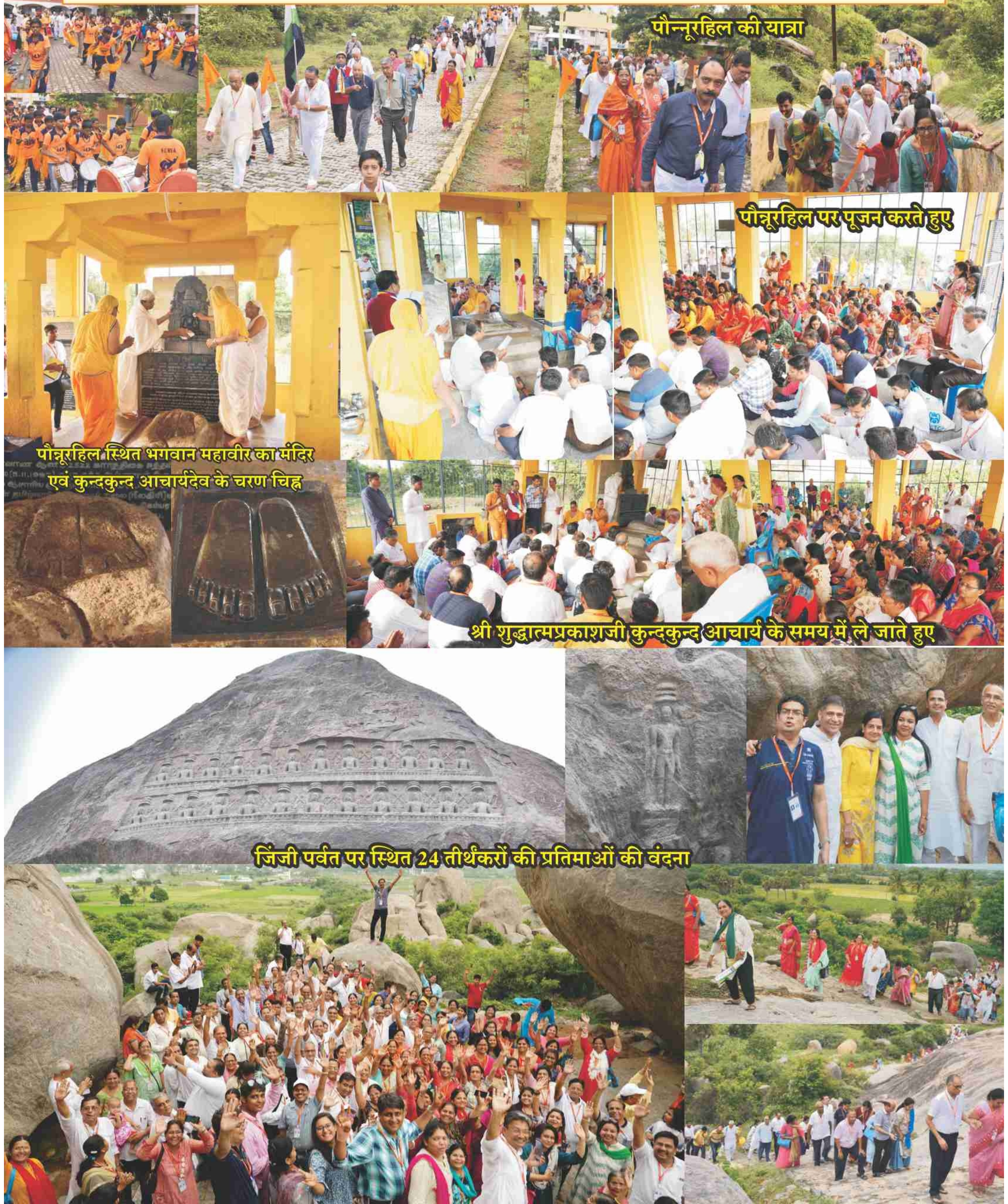

पौन्नूरहिल की यात्रा

पौन्नूरहिल पर पूजन करते हुए

पौन्नूरहिल स्थित भगवान महावीर का मंदिर एवं कुन्दकुन्द आचार्यदेव के चरण चिह्न

श्री शुद्धात्मप्रकाशजी कुन्दकुन्द आचार्य के समय में ले जाते हुए

जिंजी पर्वत पर स्थित 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की वंदना

पृष्ठ 10 का शेष...यात्राओं में कल्पना भी नहीं की जा सकती। गजब का अनुशासन, समयबद्ध कार्यक्रम, साधर्मी वात्सल्य, सुन्दर व्यवस्थाएं आदि समस्त गतिविधियों ने इस यात्रा को बहुत ही रोचक व आनंददायक बना दिया। अंत में पूरी यात्रा टीम व कार्यकर्ताओं का बहुत-बहुत आभार। कोलकाता मुमुक्षु मण्डल का हार्दिक अनुरोध है कि इन यात्राओं का सिलसिला प्रतिवर्ष चलता रहे; जय-जिनेन्द्र। **– सुरेश पाटनी, कोलकाता**

सांसारिक कार्यों से निर्विकल्प रहे...

श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ द्वारा आयोजित तमिलनाडु के तीर्थ और मंदिरों की अविस्मरणीय यात्रा का सौभाग्य मिला। भाई शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के नेतृत्व में टोडरमल स्मारक के शास्त्रियों ने यात्रियों की समस्त सुविधाओं को ध्यान में रखकर यात्रा बहुत ही शानदार तरीके से आयोजित की। सभी यात्री सांसारिक झंझटों से पूर्णत: निर्विकल्प होकर दर्शन और धार्मिक क्रियाओं में ज्यादा से ज्यादा समय दे सकें। यात्रा का आरम्भ आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पौन्नूरमलै पर डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन और उनकी तपोभूमि के परिचय से हुई। यात्रा के हर पड़ाव पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जैसे माननीय विद्वान का समागम और आत्मानुभूति पर उनके प्रतिदिन के प्रवचनों ने यात्रा में चार चाँद लगा दिये। तमिलनाडु में दिगम्बर जैनधर्म की अनूठी धरोहर देखकर सभी अचंभित थे। आचार्य कुन्दकुन्ददेव की तपोभूमि से लेकर 1500-1700 साल पुराने मंदिरों और उनके इतिहास को देख जानकर जहाँ हृदय रोमांचित हो उठता था, वहीं वहाँ के घटते जैन समुदाय को देखकर मन निराश होता था। यात्रा के अन्तिम पड़ाव पर स्मारक के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने जो तमिलनाडु एवं दक्षिण भारत में आचार्य कुन्दकुन्ददेव के परमागम एवं तत्त्वप्रचार करने, जैन तत्त्वज्ञान को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया, उससे हम सभी की यात्रा सार्थक हो गई एवं उस पर चार चांद लग गये। ऐसी यात्रा का सौभाग्य बार-बार मिले – ऐसी भावना है; जय-जिनेन्द्र। **– अशोक पाटनी, सिंगापुर**

अध्यात्ममय, आनंदमय एवं अत्यंत सफल यात्रा...

तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा में हमें आचार्य कुन्दकुन्ददेव की पावन तपोभूमि पौन्नूर आदि अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन का अभूतपूर्व लाभ मिला। साथ में डॉ. भारिल्ल द्वारा आत्मानुभूति एवं डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर बहुत ही उत्तम और मननीय प्रवचन हुआ। हमारी बस में युवा विद्यार्थी पण्डित अमनजी द्वारा आध्यात्मिक गोष्ठी, हाउजी, प्रश्नोत्तरी और भक्ति का ज्ञान सहित आनंद का सुन्दर सहयोग मिला। यात्रा में अत्यंत सुविधाजनक वातानुकूलित बस में जगह-जगह पहुंचना और खाने की तथा आवास की व्यवस्था अतिउत्तम रही। यह सम्पूर्ण यादगार यात्रा अध्यात्ममय, आनन्दमय और अत्यंत सफल रही, जिसका पूरा श्रेय पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी, सर्वज्ञ भारिल्ल, जिनकुमार शास्त्री, रूपेन्द्र शास्त्री एवं सर्व युवा विद्वानों को और उनके टीम वर्क को जाता है। लम्बे समय तक यह यात्रा स्मृति से नहीं हटेगी। हर साल ऐसी यात्रा का आयोजन करते रहें और हम सबको यह अप्रतिम लाभ मिलता रहे – ऐसी भावना के साथ...। **– उल्लास झोबालिया, मुम्बई**

हमारी तमिलनाडु की यात्रा ...

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर अनेक यात्राएं आयोजित की गई। बुन्देलखण्ड यात्रा, दक्षिण भारत यात्रा, मालवा यात्रा और अब तमिलनाडु यात्रा। इन यात्राओं का मुख्य उद्देश्य देशभर में बिखरे जैन लोगों को एक दूसरे के सम्पर्क में लाना और अपनी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराना है। तीर्थ उसे कहते हैं, जिससे संसार सागर से तिरा जाये। यह तीर्थयात्रा अपने इन उद्देश्यों में पूरी तरह सफल रही। टोडरमल स्मारक द्वारा प्रतिवर्ष ऐसी यात्राएं संचालित होती रहें – मेरी यही भावना है। **– मोना भारिल्ल, जयपुर**

पत्थरों की कारीगरी अद्भुत थी...

तमिलनाडु एक ऐसी जगह है जहाँ हर कोई आसानी से जाने की नहीं सोच सकता। हर तीर्थक्षेत्र के बारे में हम सुनते रहते हैं। हर जगह लोग यात्रा करने जाते भी हैं, लेकिन सबसे अंत में नम्बर आता है तमिलनाडु का; क्योंकि वहाँ पहुंचना+खाने-पीने की व्यवस्था+भाषा की दिक्कत बहुत ही बड़ी समस्या है। इतना सरल और आसान नहीं है, जितना हम और कहीं भी यात्रा करने जाते हैं। बैंगलोर में रहने के बाद भी मैंने कभी नहीं सोचा कि चलो तमिलनाडु की यात्रा पर चलते हैं...। तीर्थयात्रा का हमारा जो तरीका है जैसे – पूजन, प्रवचन, भक्ति सभी प्राचीनतम मंदिरों के दर्शन – उसका तो क्या कहना। वहाँ की खास बात जो पत्थरों पर कारीगरी+प्रतिमा बनाई गई थी, वो बहुत अद्भुत थी। हमें जो डायरी दी गई थी, वह बहुत ही अच्छी है। हमें उसे हमेशा संभालकर रखना है; क्योंकि उन तीर्थक्षेत्रों के नाम भूल जाने पर उसमें से पढकर हम पुन: स्मृति ताजा कर सकते हैं। यह यात्रा अकेले करने पर उतनी अच्छी नहीं हो पाती, जितनी यात्रा संघ के साथ हुई। बहुत आनन्द आया; धन्यवाद। **– संध्या भारिल्ल, जयपुर**

परिणामों में विशुद्धता रही...

यात्रा के दौरान सभी विद्यार्थियों के साथ बहुत अच्छा लगा, सभी लोगों का सहयोग मिला और समय का पता भी नहीं चला। इतने अच्छे दर्शन,

पूजन, भक्ति आदि की वजह से परिणामों में विशुद्धता रही। देश के सभी तरफ के लोगों का साथ और अपनापन मिला, जिससे एक परिवार जैसी अनुभूति हुई। व्यवस्था के बारे में क्या कहें, इससे अच्छी व्यवस्था के बारे में तो सोच ही नहीं सकते। सभी व्यवस्थापकों को बहुत–बहुत धन्यवाद। वैसे मैं भी इसी परिवार का हिस्सा हूँ और अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझती हूँ। आकाश, नमन, प्रतीक, अनेकान्त – इन सब लोगों ने बस में बहुत अच्छा माहौल बनाकर रखा। पूरी यात्रा में तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ मिला। हमारी बस में सभी भूतपूर्व विद्यार्थी और सभी बड़े विद्वान थे, अत: धार्मिक चर्चा हमेशा चलती रहती थी। इस क्षेत्र की ऐसी यात्रा इसी यात्रा संघ के साथ संभव थी। इतने प्राचीन मंदिर, ताड़पत्र आदि के दर्शन हुए, ठहरने, भोजन आदि की और बस की व्यवस्था बहुत–बहुत अच्छी थी। सभी यात्रियों का बारातियों की तरह ख्याल रखा गया। आचार्य कुन्दकुन्द, अकलंकदेव आदि की तपोभूमि के दर्शनकर ऐसा लगा मानो हम उन्हें अपने आसपास ही महसूस कर रहे थे। इस यात्रा में हमने बहुत कुछ पाया है। निर्भार कर देने वाली सारी व्यवस्थाएं और निश्चिंत व निर्विकल्प कर देने वाले दादा के प्रवचन अद्भुत थे। धन्यवाद।

– संस्कृति गोधा, जयपुर

जैन संस्कृति अनादि-अनंत है...

यात्रा के समय समुचित व्यवस्था रही। खासतौर से 1000–2000 साल पुराने मन्दिर, अद्भुत कलाकारी आदि। इससे सिद्ध होता है कि हमारी जैन संस्कृति अनादि की है और अनन्त काल तक रहेगी। हमारे लिये अकेले में ऐसी प्राचीन विरासत देखना आसान नहीं होता। छोटे दादा, परमात्मजी, शुद्धात्मजी, पीयूषजी आदि के संरक्षण व उनकी टीम के सभी सदस्य साधुवाद के पात्र हैं। शुद्धात्मजी के कार्य की जितनी भी तारीफ की जाए उतनी कम है। अत: इसीप्रकार की धर्म प्रभावना का दौर चलता रहे और सभी जीव आत्मा से परमात्मा बनने की कला सीखकर अपना कल्याण करें, जैसे छोटे दादा ने ध्यान का स्वरूप समझाया।

– अजितप्रसाद जैन/सुशीला जैन, दिल्ली

यात्रा की प्रशंसा करते नहीं थकते...

हमें अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ द्वारा दिनांक 16 से 21 अक्टूबर, 2018 तक आयोजित तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा पर जाने का अद्भुत अवसर प्राप्त हुआ। यह यात्रा हम सभी के लिये जीवनभर अविस्मरणीय रहेगी। यात्रा से लौटे आज दस दिन होने पर भी हम अपने साधर्मीजनों से इस सफल कार्यक्रम की प्रशंसा करते नहीं थकते। यात्रा के दौरान हमें न केवल 1300–2500 वर्ष पुराने मंदिरों के दर्शन करने को मिले, अपितु जैनधर्म के गौरवशाली इतिहास को जानकर अपने जैन होने पर एक अभूतपूर्व गर्व महसूस हुआ। आचार्य कुन्दकुन्ददेव, अकलंकदेव जैसे महान आचार्यों के चरणों द्वारा पवित्र की गई धरा पर आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचन सुनते समय महसूसर होता मानो हम उसी महान दौर में उन्हीं आचार्यों को सुन रहे हों। यात्रा में बसों में भी भक्ति, धार्मिक चर्चा व खेल खेलते–खेलते समय कब बीत जाता पता ही नहीं चलता। बड़ों के साथ–साथ बच्चों में भी जैन संस्कारों की रुचि बढते देख हृदय प्रफुल्लित हो उठता। 308 यात्रियों के संघ को श्री एस.पी. भारिल्लजी के मार्गदर्शन में इस तरह संचालित किया गया कि हमारा सोचना भी दुर्लभ है। ऐसी यात्रा हम अकेले तो कभी नहीं कर पाते। हम श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ के बहुत आभारी रहेंगे और निश्चित ही संघ की भविष्य में होने वाली सभी यात्राओं में शामिल होने का अवसर नहीं गंवाएंगे।

– स्वाति–वैभव जैन, दिल्ली

एकान्त-साधना का भाव हुआ...

तमिलनाडु प्रान्त के चयनित मन्दिर पहाड़ी मठ आदि तीर्थस्थलों का अवलोकनभर किया, उन्हें या उनके बारे में जानने की जिज्ञासा जगी। पौन्नूरमलै पर आकर रहने का भाव भी जागृत हुआ। मेरा प्रयास रहेगा कि 15–20 दिन यहाँ एकान्त में रहकर कुछ साधना की जाये। वीतराग–विज्ञान तीर्थयात्रा संघ के अन्तर्गत मेरी यह प्रथम यात्रा थी। तीर्थयात्रियों में अधिकांश सुपरिचित रहे। निर्विघ्न तीर्थस्थलों के दर्शन का सुअवसर मुझे मिला, यह सुयोग सचमुच ही प्रस्तावित तीर्थयात्रा के निमित्त ही मैं पा सका, इसकी मुझे प्रसन्नता है।

– प्रो. श्रीयांसकुमार सिंघई, जयपुर

यात्रा का वर्णन शब्दातीत...

इस आनन्ददायी यात्रा का वर्णन शब्दातीत है। बहुत अच्छा लगा। यात्रा बहुत अच्छी थी। तीर्थयात्रा के साथ ये ज्ञानयात्रा अधिक रही। आदरणीय छोटे दादाजी का आत्मानुभूति पर व्याख्यान यात्रा की श्रेष्ठ उपलब्धि रही। यात्रा में कोई कमी थी ही नहीं, इसलिये इस संबंध में कोई सुझाव नहीं है। हाँ यदि संभव हो तो प्रतिवर्ष यात्रा का कार्यक्रम बनाएं। इसे फैडरेशन की एक स्थायी गतिविधि का रूप दें।

– डॉ. महेश जैन, भोपाल

सर्वोत्तम व्यवस्थाएं रहीं...

सभी व्यवस्थाएं अतिउत्तम, सर्वोत्तम रही, वैसे मेरा ध्यान इस ओर गया ही नहीं; क्योंकि मेरे अभिप्राय में सिर्फ कुन्दकुन्द आचार्य और उनके बारे

में पूर्ण जानकारी प्राप्त करना ही रहा। दादाजी का प्रवचन मुख्यरूप से चिन्तन में रहा, अनुभूति का विषय एवं ध्यान के बिन्दु से बहुत कुछ जानने को मिला। ऐसी यात्राओं में सदा शामिल होने का वचन देता हूँ। **– प्रदीपकुमार जैन रपरिया, कलकत्ता**

बहुत-बहुत आभारी हैं...

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा आपकी पूरी टीम के सहयोग से सानन्द सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस यात्रा में हमने अतिभव्य प्राचीन जिनमंदिरों की वन्दना के साथ आदरणीय दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा आत्मानुभूति के उपाय एवं डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द की महिमा विषय पर तत्त्वचर्चा का लाभ लिया। आपकी यात्रा टीम ने हमारी यात्रा को सफल सुखद और आनन्ददायक बनाने के लिये दिन-रात निरंतर प्रयत्न किया, जिससे हम सभी यात्रियों ने निराकुलता से तत्त्वज्ञान से युक्त इस यात्रा का भरपूर आनन्द लिया। आपकी टीम ने हमारी सभी सुख-सुविधाओं का बहुत ध्यान रखा, जिसके लिये हम सभी यात्रीगण आपके बहुत-बहुत आभारी हैं। हम आपकी आगामी यात्रा की घोषणा की प्रतीक्षा बेसब्री से करेंगे। **– अखिलेश-मीनाक्षी गंगवाल**

कुन्दकुन्द एयरपोर्ट एवं आचार्यों की तलहटी को स्पर्श करने का अभूतपूर्व अनुभव...

पौन्नूरमलै में पहुंचकर यह महसूस हुआ कि यह वही स्थान है जहाँ से 2000 वर्ष पूर्व आचार्य कुन्दकुन्द साक्षात् अरहंत परमात्मा सीमंधर भगवान के पास गये थे अर्थात् यह वही हवाई अड्डा है, जहाँ से विदेहक्षेत्र का विमान उड़ा था। इन समस्त क्षेत्रों की वंदना करते समय हजारों मुनिराजों के विचरण की अनुभूति होती थी कि इन्हीं गलियों में, मार्गों में, वे चलते-फिरते सिद्धों के समान दिगम्बर संत आहारचर्या के लिये विचरते थे, इन्हीं पाषाण शिलाओं, पहाड़ियों, गुफाओं में मुनि भगवंत आत्मध्यान के लिये बैठते थे। दिगम्बर मुनिराजों की उपस्थिति की अनुभूति का वह क्षण अत्यंत रोमांचकारी था। इन पहाड़ियों का कण-कण अन्तर्मुख होने की प्रेरणा देता है, ऐसे में दादा द्वारा आत्मानुभूति के प्रवचन प्रेरणात्मक रहे। जानो, जानो और बस जानते रहो की ध्वनि अन्तस्तल में उतर गई। अत्यंत प्राचीन जिनमंदिर, अद्भुत जिनप्रतिमाओं, ताड़पत्रीय जिनवाणी के दुर्लभ दर्शन, विद्वानों का सान्निध्य, साधर्मियों का समागम, आध्यात्मिक वातावरण, पूजन-भक्ति-चर्चा-सब कुछ (आवास, भोजन सहित) outstanding था। **– संजय सेठी, जयपुर**

सभी शास्त्री भाइयों को धन्यवाद...

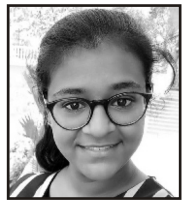

हमने बहुत सारी नयी चीजें देखी। ताड़ पत्र तो आज के समय में देखना असंभव था। हमारे बस लीडर विवेक भैया ने हमारा बहुत सहयोग किया। यात्रा में दादा और अन्य शास्त्री भाइयों से हमें वह सभी जानकारी मिलती है, जो हमें पाठशाला में भी नहीं मिल सकती। हम उन सब भाइयों को धन्यवाद देते हैं। **– प्रियांशी जैन, उदयपुर**

तत्त्वज्ञान का लाभ मिला...

यह यात्रा हमारे लिये कभी न भूलने वाली रही। छोटे दादाजी का प्रवचन में तत्त्वज्ञान का बहुत लाभ मिला। हमें इस यात्रा में बहुत आनन्द आया। हमें अगली यात्रा में भूल न जाना। आगे हमें अपने बच्चों को भी लेकर आने की भावना है। हमें यात्रा में कुछ नहीं करना था, केवल देखना व जानना था। इस यात्रा में सब समान थे। **– श्रवण कुमार जैन, दिल्ली**

असम्भव को सम्भव किया...

यात्रा में बहुत आनन्द आया। सभी का उत्साह जबरदस्त था। ये यात्रा हम अकेले तो सोच भी नहीं सकते थे। असम्भव को सम्भव किया। सबका मैनेजमेन्ट, बिना किसी असुविधा के यात्रा सम्पन्न होना - बहुत अच्छी बात है। आगे भी ऐसी अद्भुत प्रतिमाओं के दर्शन करने से सम्बन्धित यात्रा करवाते रहें। इस क्रम को जारी रखें, हमें अच्छा लगेगा। पूरी टीम और बस लीडर - सभी को धन्यवाद देना चाहूंगा; भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग करते रहें। **– प्रदीप जैन, जयपुर**

ऐसी यात्रा अकेले नहीं कर सकते...

यात्रा में सभी साधर्मियों के साथ जो आनन्द आया उसकी कल्पना हम अकेले तो कर ही नहीं सकते। ऐसे अद्भुत मन्दिर देखने का अवसर मिला कुन्दकुन्दाचार्य का नाम हर जगह हर शास्त्रों में आता है, ऐसे महान आचार्य की तपोभूमि के साक्षात दर्शन करने से तत्त्व व धर्म की प्रभावना के भाव और ज्यादा बढे हैं। ऐसी जगहों पर पूरा मैनेजमेन्ट इतना सुव्यवस्थित तरीके से बिना विलम्ब के होना, ये बहुत बड़ी बात है। ऐसा अद्भुत कार्य तो वास्तव में धार्मिक रुचि वाले व्यक्ति ही कर सकते हैं। ये यहीं इस यात्रा में देखने को मिला। सब कुछ अच्छा व सफल रहा। कमी कुछ भी नहीं थी। दादा ने जो समय-समय पर आत्मानुभूति कैसे हो? निर्विकल्प रहकर ही सबकुछ हो सकता है, हम निर्भार कैसे रह सकते हैं? ये बात बहुत अच्छी लगी। आगे भी ऐसी ही यात्रा करते रहें। **– संगीता जैन, जयपुर**

व्यर्थ विकल्प नहीं आये...

यह यात्रा तो हमारे जीवन में बहुत सुन्दर अविस्मरणीय क्षण है। यह तो मैं कभी नहीं भूल सकती हूँ; क्योंकि आपकी जो सुविधाएँ हमको मिली ये तो हमें कभी कहीं नहीं मिल सकती है। आपकी व्यवस्था में किसी चीज की कमी नहीं थी। व्यवस्था तो बहुत ही सुन्दर थी। बस में भी तत्त्वचर्चा के माध्यम से ये पाँच दिन कैसे निकल गये पता ही नहीं चला। दादा के प्रवचन सुनकर तो हम प्रसन्नता का अनुभव करते ही हैं। मन में व्यर्थ के कोई विकल्प नहीं आये। तत्त्वज्ञान सुनकर स्वाध्याय करने की प्रेरणा मिली। इसतरह यह यात्रा हमारे जीवन की अविस्मरणीय यात्रा रही। **– सौ.सुजाता महावीर पाटील**

सभी से मैत्रीपूर्ण संबंध बने...

यात्रा के दौरान हमारा अनुभव बहुत ही उत्साहपूर्ण रहा। यात्रा मंगलकारी तो रही ही, साथ में भोजन की व्यवस्था भी अच्छी रही। हर चीज का परफेक्ट मैनेजमेन्ट था। पूरी यात्रा में हमने स्टाफ या बस लीडर से 'ना' शब्द नहीं सुना। सबसे मैत्रीपूर्ण कौटुम्बिक संबंध बन गये। **– जिनेन्द्रकुमार जैन**

पुरानी जैन संस्कृति का दर्शन किया...

यात्रा का अनुभव सुखद रहा। एक पारिवारिक वातावरण के साथ आध्यात्मिक रसास्वादन करने को मिल गया। यात्रा की पूरी प्लानिंग परफेक्ट होने से बहुत ही कम परेशानियों का सामना करना पड़ा। बस लीडर का सहयोग 100% होने से तीर्थवंदना करने में मजा आया। विद्वानों से चर्चा करने को मिली। साथ में ही आध्यात्मिक ज्ञानवृद्धि हुई। स्वागत भी बारातियों जैसा हुआ तो यहीं से यात्रा की शुरुआत सफल रही। पुरातत्त्व जैन संस्कृतियों का दर्शन हुआ जो ग्रुप के बिना असंभव था। यात्रा में कोई कमी नहीं रही। 'अतिथि देवो भव:' यह उक्ति चरितार्थ हुई। **– प्रज्ञा-पंकज जैन**

100% परफेक्ट आयोजन...

सुखद भावनाएं, धार्मिक दृष्टि से अतिलाभकारी। हर कार्य समय पर होता था, इसलिये कभी भी असुविधा नहीं हुई। आयोजकों को तमिलनाडु की जमीनी हकीकत, भाषा की समस्या, सड़कों की समस्याएं आदि की पूरी जानकारी थी। इसका पूरा ध्यान रखा गया कि यात्रियों को कहीं भी आवास, भोजन, सड़क मार्ग आदि की कठिनाइयों का सामना न करना पड़े। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इससे बेहतर आयोजन हो ही नहीं सकता था। यात्रियों का स्वागत कुछ इस तरह हुआ मानो वे बाराती हैं। 100% परफेक्ट आयोजन। **– राजेशकुमार जैन**

ऐसी यात्रा हमेशा होती रहे...

बहुत सुखद अनुभव हुआ। तमिलनाडु के जिन-जिन जैन मन्दिरों की यात्रा की गई, सभी अतिदुर्लभ एवं प्राचीन; ऐसा मैंने अपने जीवन काल में कभी भी नहीं सोचा था कि इन स्थलों का दर्शन कर पाऊँगा। इस यात्रा के लिये मुझे कोई उपयुक्त शब्द समझ में नहीं आ रहा है कि क्या कहूँ; अति उत्तम एवं भविष्य में ऐसी यात्रा हमेशा होती रहे और हम इसका लाभ लेते रहें। जय-जिनेन्द्र। **– विनोद सेठी, हजारीबाग**

यात्रा ने रोमांचित कर दिया...

यात्रा के दौरान बहुत ही आनन्द का अनुभव हुआ। इसके संस्मरण हमेशा मन को रोमांचित करते रहेंगे। तमिलनाडु की यात्रा के दौरान अत्यन्त दुर्लभ प्राचीन जैन मन्दिरों के जो दर्शन हुए वो अकल्पनीय एवं अभूतपूर्व थे, जिन्हें हमारे द्वारा व्यक्तिगत तौर पर कभी भी देखना संभव नहीं हो पाता। मन्दिरों के दर्शन ताड़पत्रों पर लिखे शास्त्रों के दर्शन, पूजन, भक्ति, प्रवचनों, तत्त्वचर्चा इन सभी चीजों का एकसाथ मिलना इस अविस्मरणीय यात्रा की अभूतपूर्व उपलब्धि है। इसका सारा श्रेय वीतराग विज्ञान यात्रा संघ को जाता है, जिनके अथक प्रयास के फलस्वरूप यह यात्रा सुन्दर अति उत्तम व्यवस्थाओं के साथ संपन्न हुई। सभी लोगों का आभार प्रगट करती हूँ। ये अविस्मरणीय पल हमेशा मानस पटल पर रहेंगे। ऐसी यात्राएं निरन्तर होती रहें और मैं इसका पार्ट बन सकूं – इसी भावना के साथ...। **– सुशीला जैन**

निश्चिंत होकर यात्रा की...

इस यात्रा के दौरान हमने अपने आपको टेंशन फ्री और आनन्दित अनुभव किया; क्योंकि सारा टेंशन यात्रा संघ के भाइयों ने ले रखा था। मुझे धर्म और प्रवचनों का पूरा-पूरा लाभ मिला। इतनी बढिया यात्रा इससे पहले कभी नहीं की, इतना आनन्द इतना उत्साह जीवन में पहली बार अनुभव किया, बड़े-बड़े पण्डितों का समागम उनका प्रवचन सुनकर मन खुशी से झूम उठा। सुबह से लेकर शाम तक प्योर अध्यात्म रस घोलकर पिलाया जा रहा था। यहाँ तक कि बस में भी लीडर भाइयों द्वारा धर्मचर्चा, भजन, गेम्स खिलाये जा रहे थे और बहुत सी अच्छी बातें बताई जा रही थीं, जिन्हें शब्दों में नहीं कहा जा सकता; जितनी भी तारीफ करें कम है। **– अलका जैन**

सर्वोत्तम यात्रा...

यह यात्रा मेरे विचार से विश्व की सभी यात्राओं से सर्वोत्तम है; क्योंकि यहाँ हमें आत्मानुभव के साथ-साथ अति दुर्लभ एवं प्राचीन मन्दिरों के दर्शन का सौभाग्य मिला। इस यात्रा के बारे में जितना कहा जाये उतना कम है। वीतराग विज्ञान यात्रा संघ ने अपने तन-मन-धन से जो इतनी अच्छी यात्रा करवाई है, उसके लिये हम सदा उनके आभारी रहेंगे। यात्रा को लेकर मेरा बस एक ही सुझाव है कि हर साल ऐसी यात्रा करवाई जाये। और कुछ सुझाव देना इस यात्रा के लिये उपयुक्त नहीं होगा; क्योंकि इससे बेहतर और कुछ हो नहीं सकता।

– श्वेता जैन

यात्रा के साथ तत्त्वज्ञान...

अद्भुत अनुभव। यात्रा के साथ-साथ तत्त्वज्ञान की धारा ही बेस्ट पार्ट है। शायद यह यात्रा (तमिलनाडु) कभी कर ही नहीं पाते, अगर इस यात्रा में नहीं आते। दादाजी के प्रवचन के माध्यम से आत्मानुभूति की बात तो हृदयस्पर्शी थी, जिससे धर्म के प्रति रुचि और भी अधिक हो गयी। आज तक इतनी यात्राएं की; परन्तु इस यात्रा के बाद अपने अन्दर जो बदलाव महसूस किया वह अविस्मरणीय, अकथनीय है। सुख-सुविधाएं तो बेस्ट थी ही; परन्तु जो धार्मिक वातावरण (तत्त्वज्ञान का) रहा वह कहीं भी नहीं मिल सकता। दादा का जो धर्म की प्रभावना के लिये उत्साह है, उससे लगता है कि काश सभी जीवों के इसी तरह के भाव हों, जिससे पूरा देश शान्ति और प्रेम के मार्ग पर चल सके। आप सभी के इस दुर्गम प्रयास की सराहना के लिये मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। सभी आयोजकों को मेरा शत-शत नमन, जो हमारी सुविधाओं एवं सुख के लिये दिन-रात एक पैर पर खड़े रहे। बस लीडर की तो जितनी प्रशंसा करें कम है। हमारे अंदर भी दादा जैसी धर्म के प्रति रुचि जगे यही मेरी कामना है। लिखने को बहुत कुछ है; पर समय की मर्यादा के कारण अपनी भावनाओं को संक्षेप में ही व्यक्त कर पायी। Thanking you all, Best yatra, Keep it up.

– सिम्पल जैन रपरिया, कलकत्ता

धार्मिक लाभ मिला...

यात्रा अद्भुत रही, सोचा था उससे कई गुना अधिक धार्मिक लाभ मिला। पहली बार दादाजी का प्रवचन प्रत्यक्ष सुनने का आनंद बहुत अच्छा रहा। वैसे तो कोई सुझाव देने की जगह ही नहीं रही, बल्कि हमने कुछ लीडरशिप की बातें और धार्मिक ज्ञान सीखा है। बस एक ही सुझाव है कि अगली बार हो सके तो सामूहिक पूजा, प्रवचन एक-दो ज्यादा और छोटी-सी अनिवार्य परीक्षा भी अपने कार्यक्रम में शामिल हो तो सोने पर सुहागा जैसा अनुभव रहेगा। Superb Yatra, Superb Managment.

– विशाल शाह

साधर्मी वात्सल्यभाव देखने लायक था...

सभी साधर्मियों के प्रति जो वात्सल्यभाव था, वह देखने लायक था; हमें अपने परिवार में भी इसी प्रकार का वात्सल्य बनाये रखना चाहिये। लीडर भी वास्तव में परिवार का ही सदस्य था। प्रथम तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि इस यात्रा के दौरान आयोजन में प्रयोजन को विशेष महत्व दिया गया, जब दादा ने आत्मा का लक्ष्य कराया तो वास्तव में मनुष्य भव आत्मकल्याण के लिये ही मिला है – ऐसी विशेष विशुद्धि प्राप्त हुई। यह यात्रा हमेशा निकाली जाये, जिससे हम अपने और भी साधर्मियों को ला सकें एवं धर्म के मार्ग पर लगा सकें।

– दिव्या जैन, बांदा

मन गद्‌गद् हो उठा...

यात्रा करना, खाना-पीना; परन्तु साथ ही दिशा विहीन न हों, इसलिये दादा की दी हुई ज्ञानवर्धक आत्मानुभूति... यह तो हमें ऐसी दवाई मिली है कि कुछ न करके भी तरने की विधि! दादा का पूरा टोडरमल स्मारक परिवार जिस तरह से यात्रा को सफलतम पूरा करवाने में लगा था, ये एकजुटता देखकर मन गद्‌गद् हो गया। समापन के समय एक भी व्यक्ति भूले बिना धन्यवाद देना, आभार मानना ये व्यक्ति के मन को इस तरह खुश कर देती है कि बिना कुछ दिये भी वह सब कुछ पा जाता है। 76 लोगों की पूरी टीम को हमारी ओर से भी बहुत-बहुत धन्यवाद और इस यात्रा के दौरान हमसे भी कहीं कोई गलती हुई हो, आपका दिल दुखा हो तो क्षमा चाहते हैं; पर हाँ, अगली यात्रा में हम आपके साथ जरूर जाना चाहेंगे। बावनगजाजी की तरफ का यात्रा-कार्यक्रम बनाएं तो हमारी ओर से व्यवस्था में पूर्ण सहयोग रहेगा।

– सौ.सरिता पाटनी

जितना सराहा जाये कम है...

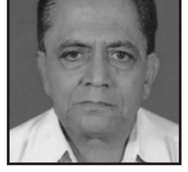

मेरी यह पहली यात्रा है, मुझे अनुमान से ज्यादा सुखद अनुभव रहा। किसी भी समय कोई कमी नहीं रही। यह यात्रा मेरी जिन्दगी की सबसे बढ़िया स्मरणीय यात्रा रही। यदि आप अगले साल यात्रा निकालें तो मुझे परिवार सहित पहली श्रेणी में रखें। आदरणीय डॉ. भारिल्ल के सारगर्भित प्रवचन से मैं निर्भार हो गया, जिन्दगीभर के किये गये आत्मानुभूति के सम्बन्ध में प्रयास निरर्थक लगे। इतना सहज धर्म है। यह आपके प्रवचन से सदा ही निर्भार हो गया हूँ, क्रमबद्धपर्याय की तथा ज्ञान की पर्याय की

तत्समय की योग्यता की बात समझ में आने से इतना निर्भार हो गया हूँ कि शब्दों में बात नहीं आ सकती। सबसे बड़ी उपलब्धि संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणम्। बस लीडर का व्यवहार उत्तम रहा। खाने के बारे में कोई सुझाव की आवश्यकता नहीं, अतिउत्तम था। समस्त कार्य समयबद्ध रहा। पूरी टीम को मेरा जय-जिनेन्द्र। आपके इतने अथक प्रयास के लिये हार्दिक बधाई। कहाँ तक लिखूँ, आपकी पूरी टीम को सम्मानित करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं, जितना सराहा जाये कम है। शेष अगली यात्रा में...।

– भगवानदास जैन, सीकर

विकथाओं से बचे रहे...

तमिलनाडु तीर्थयात्रा आयोजन समिति ने यात्रा के लिये आवश्यक रहने खाने-पीने की छोटी से छोटी आवश्यकताओं का ध्यान रखकर एवं अध्यात्म परोसकर पाँचों विकथाओं से बचाकर अत्यंत आत्म-विशुद्धिपूर्वक ना केवल साधर्मियों को अपितु स्वयं को मोक्षमार्ग में अग्रसर किया है, वह अद्भुत है। इसलिये सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद!

– अनिल जैन, कोरबा

नयी चेतना का संचार हुआ...

कुन्दकुन्ददेव की तपोभूमि पौन्नूरमलै की हमारी यात्रा अत्यंत सुखद और मंगलमय थी। जिनमंदिर दर्शन, पूजन, प्रवचन, भक्ति, नाश्ता, भोजन और विश्राम की व्यवस्था अत्यंत ही सराहनीय थी। हम टीम वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ का आभार व्यक्त करना चाहते हैं कि उन्होंने इतनी उत्तम व्यवस्था का आयोजन किया। जो प्रवचन, विचार और चर्चा हमने सुनी वह लाभदायक थी। इतने कम समय में सारी बातें बड़े ही मार्मिक तरीके से हमें प्रस्तुत की गई हैं। आपने जो मेहनत की है, इसके अतिरिक्त आपने लोगों से संपर्क करके जानकारियाँ एकत्र की हैं, यहां आने से पहले आपने उसका विश्लेषण किया है। एक प्रकार से काफी लोगों को जोड़ करके इसमें से अमृत निकला है। आपका यह प्रामाणिक प्रयास और मेहनत चारों तरफ उत्साह, उमंग का संचार करता है, मानो एक नई चेतना का अनुभव हुआ हो। हम आप सबका ह्रदय से अभिनन्दन करते हैं और धन्यवाद करते हैं।

– स्वरूप-सरिता काला, गोवाहाटी

अलौकिक देवभूमि की अविस्मरणीय यात्रा...

यह अवधारणा आम है कि तीर्थयात्रा पुण्य का हेतु होती है और इसमें सुख-सुविधाएं गौण करनी पड़ती है, जबकि पर्यटन में सुख-सुविधाएं ही मुख्य होती हैं। इसे गलत सिद्ध करती हुई सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं से युक्त, वीतराग विज्ञान तीर्थयात्रा संघ द्वारा आयोजित पुरातात्विक क्षेत्रों की यह धार्मिक यात्रा, आधुनिक प्रबंधन शास्त्र का व्यावहारिक अनुभव थी। पहले यात्रा संबंधी व्यवस्थाओं को जुटाने में जो समय, विकल्प और उपयोग लगा करता था, वो लगा इस बार सम्पूर्ण जिनागम के सार, आत्मानुभूति के उपाय, कुन्दकुन्दाचार्य को जानने में, अपनी प्राचीन विरासत के साक्षात्कार में और पूजा भक्ति करने में। सूरत सम्भाग के हम सभी लोग ह्दय से आभारी हैं कोलकाता के आत्मार्थी श्री सुरेशजी पाटनी के, जिन्होंने हमें इस महायज्ञ का हिस्सा बनने का सुअवसर प्रदान किया।

– सुरेश- किरण छाबड़ा, अनामिका-पीयूष जैन, सूरत

प्राचीन मंदिरों एवं ताड़पत्र के दर्शन किये...

श्री वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ द्वारा आयोजित तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा में जाने से पूर्व हमारे मन में बहुत सारी जिज्ञासाएं थी – जैसे धर्म के महान ग्रंथों के रचयिता आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी, आचार्य श्री अकलंकदेव आदि की तपोभूमि कैसी होगी? वहाँ के मंदिर कैसे होंगे? आदि...। हमारे जीवन की प्रथम धार्मिक यात्रा तमिलनाडु का अनुभव बहुत ही शानदार रहा और इसका श्रेय हम श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता एवं वीतराग विज्ञान यात्रा संघ को देते हैं। विचारों में परिवर्तन और धर्म के गूढ रहस्य छोटे दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों द्वारा समझ में आया। जितने भी शास्त्री विद्वान एवं साधर्मीजन थे, उनके आचार-विचार और सरल स्वभाव देखकर मन बहुत प्रफुल्लित हो जाता था। आवास, यातायात और भोजन संबंधी व्यवस्थाओं की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है। तमिल युवाओं को जैनियों की मुख्यधारा में लाने के लिये जो कदम डॉ. भारिल्ल के नेतृत्व में लिया गया, वह अपने आपमें एक अद्भुत कार्य है, जिसकी हम भी अनुमोदना करते हैं। यात्रा के दौरान हमने न सिर्फ प्राचीन एवं ऐतिहासिक मंदिरों के दर्शन किए, अपितु हमें हमारे गौरवमयी जैन इतिहास के बारे में ताड़पत्रों के माध्यम से परिचय भी हुआ। इसके लिये पूरी यात्रा टीम संघ बहुत-बहुत आभार एवं धन्यवाद। अंत में यही कामना है कि आगे भी हमें ऐसी धार्मिक यात्राओं का सौभाग्य निरंतर मिलता रहे; जय-जिनेन्द्र।

– राजेश-अनीता जैन (अजमेरा), हजारीबाग

दुर्लभ यात्रा आसान हुई...

तमिलनाडु की यह यात्रा एक व्यक्तिगत स्तर पर करना असंभव था और मैं वीतराग विज्ञान यात्रा संघ का बहुत आभारी हूँ कि उनके कारण यह दुर्लभ यात्रा इतनी आसानी से हो गयी। खाने से लेकर आवास एवं यातायात की सारी व्यवस्थाएं अभूतपूर्व थीं। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप हर वर्ष यह यात्रा आयोजित करते रहें, जिससे अधिक से अधिक लोग जैनधर्म की प्रभावना में जुड़ सकें और सब यह धर्मलाभ ले सकें; जय-जिनेन्द्र।

– राजेश कुमार रपरिया, कलकत्ता

Truly a mobile shivir...

This Yatra was nothing less than a five star travel package at negligible cost! General sentiment was that Yatris felt they were taken care of like baratis with the high class staying facility, Mercedes Benz bus transportation, non repeated rich food, choice of places and perfect mix of Adhyatm with impeccable time management! The bus journey was neither too long and was made so entertaining that before we realized we were already at the destination! There was no day we had no Pooja or Bhakti or pravchan and still it didn't feel rushed....it was truly a mobile shivir with lot of action to keep anyone fully engaged....

The management was nothing less than Sig Sigma process with no flaws..... don't know where from SP Bharill learnt this highest degree of mass management without a single management degree! Pt. Piyush Shastri is the example of another top notch management skills with full commitment and dedication at any hour and any scale! This truly is a winning team with Rupendra, Anekant and all team Leaders!! Haven't seen such professionalism in best of places that too with optimized cost and time utilization!!! Not to miss the credit to Sarvagya who now is another leader in making! He managed all bus leaders single handedly..... in spite of all hard work through the day, entire team's smiles didn't fade even at midnight hour and were ever acceptable to any requests, demands or suggestions!

My permanent bookings for all Yatras to come. **- Swanubhuti Jain, Mumbai**

Well planned and coordinative...

Every action of team was well planned and coordinative hence gave me comfort and peace. The team worked on every aspect for the comfort of the passengers. **- Prakash Jain (Engineer)**

Feeling blessed on my first trip...

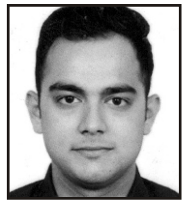

I am feeling blessed on my first trip "Tamilnadu ki Yatra" with Todarmal Smarak. I am spell bound with the terrific energy by all Yatra & The Shastri and above all the most important Dada ke " AATMA ANUBHAV KA UPAY". The arrangement for food, shelter and transportation felt truly as BARAATI. Further I would participate in all future yatra by VITRAG-VIGYAN YATRA SANGH. JAI JINENDRA. **- Ankit Jain Rapariya, Kolkata**

Should be continued every year...

This is the best way to do yatra in a group with all luxury facility. All of our family gets benefitted to do yatra with pravachan of Dada, bhakti & swadhyay by bus leader in bus. This is my third time in Shri Veetrag-Vigyan Yatra. Never stop this yatra. It should be continued every year. **- Amit Jain**

Marvelous experience...

I came first time and my experience was marvelous. We can see the hard work of your time. It was really appreciating. Welcome, just felt like baratis, the facilities was very nice, weather it is jungle or small village everywhere we got the proper arrangement with the food. It was grateful trip with you all. For the trip as the trip was just impossible although as there are so many problems like language, convence, food but you all made it really possible, but the residence was little bit far from the ponnur malai, but it was really amazing. We will definitely want to come with you all every year. Thank you so much for the arrangement & trip. **- Nikita Jain**

Friendly leaders...

Comfortable, secure journey, very helpful caring leaders, sophisticated praying arrangements, sincere & informative leader, acknowledging & meeting people from different places. Good and comfortable journey with friendly leaders hard working team. Wish to have 7-9 days of trip. It was a short trip. Explored lots of places which is impossible to visit. Looking forward for more lovely trips. **- Pooja Jain**

Family trip...

यात्रा के दौरान हमें यह महसूस हुआ कि हम 300 लोगों के परिवार में यात्रा कर रहे हैं एवं सभी के साथ धर्मलाभ मिला। All the arrangements in the trip are awesome. All management is its best. I thank to our team bus leader Mr. Aakash & Naman for their continues effort to help us & do anything that makes us comfortable & enjoy the trip. Our bus leader even helps us to learn the Dharma and make us enjoy through jain concepts. Else all the things & arrangements of the food, lodging, travelling are very good. Everything was managed in such a wonderful way that we didn't face even any kind of single challenge.

Our room-mate Mr. Mahaveerji Patil & his family is very nice and they cooperated us to their best to make us comfortable. Special thanks to them. Above all we are very much affected by the positive environment that we had felt during whole trip. In this trip we learnt many useful concepts of Jain Tatva from Dada. This is my first trip where I had a very near association with Dada. I felt very graceful to be the part of this trip. This trip definitely helps to achieve vishuddhi and samta bhav in my life that helps me to the ultimate destination 'Moksh'. Thanks for everything!!

- Gaurav Jain

Beautiful hospitality & presious Pravachan...

We are greateful to team Yatra Sangh for providing such a beautiful hospitality. We also thankful to respected Dada and Godhaji for their presious Pravachan. At last thanks to all dignitaries for their support. Our Gem of person Sri S.P. Bharill and Piyushji Thank You. Jai-Jinendra.

-Arun Kumar Jain-Beena Jain, Kharagpur (W.B.)

Well cared...

Thank you for arranging such a wonderful Yatra. Everything went very well and we had a great time. We felt very well cared by you. We are greatful for all of the arrangements and hospitality..!!

- Poornima Jain, Delhi

पाठकों के पत्र...

'समय की ओर' डॉक्यूमेन्ट्री के संदर्भ में प्राप्त पत्र –

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन की यशोगाथा पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री 'समय की ओर' जिसका प्रसारण दशलक्षण पर्व के अन्तिम दिन किया गया था, को देखकर दावनगेरे (कर्नाटक) से श्री विजया देवेन्द्रप्पा लिखते हैं –

''कल 'समय की ओर' डॉक्युमेन्ट्री देखी। जिनवाणी माँ के प्रति हृदय भर आया। साक्षात् टोडरमल स्मारक भवन अपनी पचास साल की यशोगाथा, ज्ञानगाथा, अध्यात्मगाथा बता रहा है।

इतनी सुन्दर, मनमोहनेवाली प्रस्तुति और 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' इस भजन का सुमधुर, सौम्य, शान्त और अपने में डूबा हुआ प्रस्तुतिकरण बहुत ही भाया।

पूज्य गुरुदेवश्री से लेकर इस भवन के अंतर्बाह्य निर्माण में योगदान देने वाले सभी का प्रस्तुतिकरण श्लाघनीय, अभिनन्दनीय और प्रभावना करने वाला रहा।

शुरु से लेकर आखिर तक पत्थर से भगवान की मूर्ति बनाने का कार्य चलता रहा। जैसे छैनी–हथौड़ी की एक–एक चोट से भगवान की पाषाण–प्रतिमा तैयार होती है, वैसे ही सभी ज्ञानियों के अथक, परिश्रम, दुर्दम्य जिनवाणी प्रेम और सफल, सार्थक मेहनत से जीवन्त भगवान तैयार होते हैं। प्रतीकात्मक मूर्ति बनाने की संकल्पना बहुत अच्छी लगी और जिनवाणी की बहुत महिमा आयी।

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन की यशोगाथा, ज्ञानगाथा में आपका अभूतपूर्व योगदान रहा है। हे जिनवाणी माता, तुम्हे लाखों प्रणाम।''

आदर्श यात्री पुरस्कार

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा संचालित श्री वीतराग विज्ञान यात्रा संघ द्वारा आयोजित चतुर्थ तीर्थयात्रा (तमिलनाडु के तीर्थक्षेत्र) के अन्तर्गत प्रत्येक बस से एक आदर्श यात्री का चयन किया गया, जिसके अन्तर्गत बस नं.1 से श्री महेन्द्र गोधा जयपुर, बस नं. 2 से देशना जैन दिल्ली, बस नं. 3 से गौरव जैन जयपुर, बस नं. 4 से दिपाली जैन जयपुर, बस नं. 5 से वैशाली जैन अहमदाबाद, बस नं. 6 से श्वेता जैन कोलकाता, बस नं. 7 से प्रदीप जैन, बस नं. 8 से अमित जैन कोलकाता आदर्श यात्री रहे।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 नव. से 2 दिस.	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
7 से 12 दिसम्बर	अहमदाबाद	पंचकल्याणक
19 से 24 दिसम्बर	गौरझामर	पंचकल्याणक
26 दिस.से 1 जन.2019	जयपुर	विदेशियों हेतु शिविर
16 से 21 जनवरी 2019	हेरले	पंचकल्याणक

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ताड़पत्र पर अंकित ग्रंथों के अवलोकन का सौभाग्य

ताड़पत्रों पर लिखित ग्रंथ एवं उनकी जानकारी देते हुए जम्बूकुमारजी शास्त्री

तमिलनाडु स्नातक परिषद् के सदस्यगण

तमिलनाडु स्नातक परिषद् के कार्यों की जानकारी देते हुए जम्बूकुमारजी एवं उमापतिजी शास्त्री

आप कुछ भी कहो एवं कालचक्र के तमिल संस्करण का विमोचन

अरिहंतगिरि मठ की ओर से डॉ. भारिल्ल का सम्मान

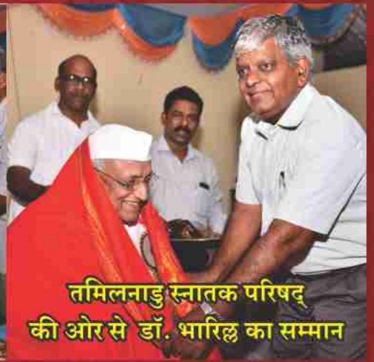

तमिलनाडु स्नातक परिषद् की ओर से डॉ. भारिल्ल का सम्मान

मेलचित्तामूर मठ के भट्टारकजी द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान एवं यात्रासंघ द्वारा भट्टारकजी का सम्मान

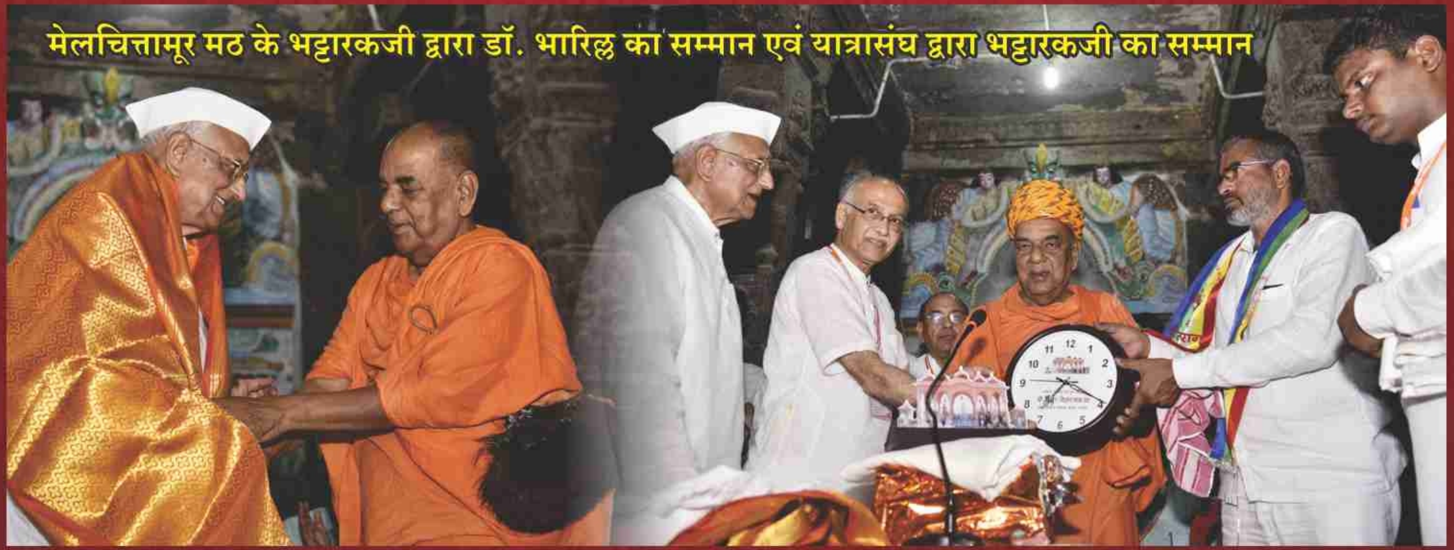

17 नवम्बर 2018, मूल्य : 2/– आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

उद्‌घाटन सभा में डॉ. संजीवजी का प्रवचन सुनते हुए साधर्मीजन

समापन समारोह

पी.सी. सेठी जयपुर | सुरेश पाटनी कोलकाता | मणिभाई कारिया मुम्बई | गौरव जैन जयपुर | उल्लासभाई मुम्बई | अनिल जैन जयपुर | प्रदीप जैन कोलकाता | जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर

स्वाति जैन दिल्ली | सरोज जैन कोरबा | आरती पाटनी सिंगापुर | चैरी जैन जयपुर | जीनव शाह अहमदाबाद

समापन समारोह में मनोभाव प्रकट करते हुए तीर्थयात्री

श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल का सम्मान करते कार्यकर्त्तागण

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-mail :
ptstjaipur@yahoo.com